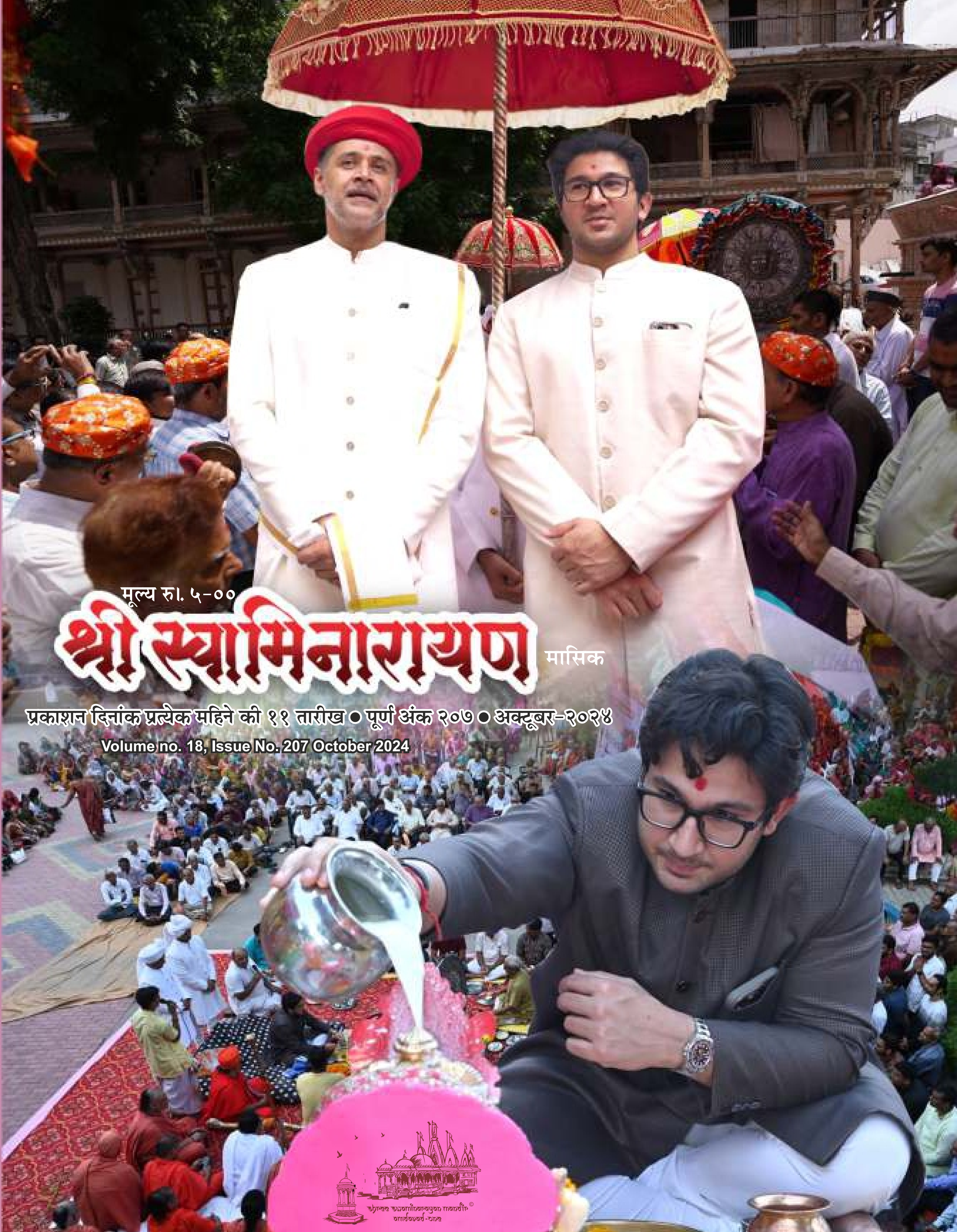

मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २०७ ● अक्टूबर-२०२४

Volume no. 18, Issue No. 207 October 2024

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

अहमदाबाद मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव।

प्रत्येक पूर्णिमा को अहमदाबाद मंदिर में होने वाली सत्संग सभा में यजमान परिवार के साथ व्यासपीठ की पूजा करते प.पू. बड़े महाराजश्री तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १८ ● अंक : २०७ ● अक्टूबर-२०२४

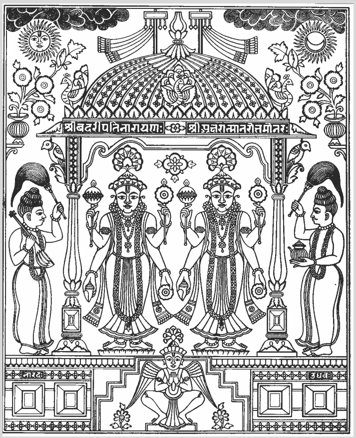

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. मेहमान को जलपान कराये ०६

०४. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वचन ०८

०५. सादरा-वासणा देश अपने हरिमंदिर तथा प्रसादी के स्थल १२

०६. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से १५

०७. भक्ति सुधा १६

०८. प्रेरणास्त्रोत्र १८

०९. सत्संग समाचार २१

अस्मदीयम्

बरसात के चार महीने चार्तुमास इन चार महीनो में संत-हरिभक्तो की तपस्या करने में प्रीत होती है। कुछ लोग एक बार भोजन करते है। उपवास करते है। पूरे चार महीने धारणा-पारणा करते है। यह तप है। तप से वैराग्य आना चाहिए । मुझे इसके बिना चलेगा, मुझे इसकी आवस्यकता नही है । तकिया की आवश्यकता नही है। हमारे हाथ ही तकिया है। इसमें मेरे और मैं की कमी आती है। धीरे-धीरे वैराग्य आता है। भगवान से लगाव होने लगता है। मैं और मेरे का भाव समाप्त होता है। अर्थात हरि के नजदीक आना है।

व्रत उपवास करके धीरे-धीरे वैराग्य लाना है। यह माया तथा मेरा तेरे का भाव छोडने का समय है। महाराजने तो भोजन-पानी तो दिये ही है। सब चिंता माया छोडकर भगवान के वृत्ति में लग जाये।

जितना भगवान की मूर्ति हृदय में धारण करेगे। और उसकी वृत्ति में जुड जाने का अद्भूत आनंद है। धन, सम्पत्ति, बंगला अधिक हो, इसका आनंद शाश्वत नही है।

अपने हृदय में भगवान हमेशा बिराजे यही अपने लिये दिवाली है। संसार की उत्पत्ति-स्थिति प्रलय करने वाले भगवान काल के नियंता है।

मानव जीवन अति मूल्यवान है। आकर ऐसे जाना नही है। जीवन को सार्थक बनाना है। भगवान को केन्द्र में रखकर तप करना है। तप से वैराग्य आता है। माया का प्रभाव नही पडता है। इस में कुछ भी नही है। ऐसा हो तो हरि नजदीक है।

जितना भगवान का होकर रहेगे। उतना जीवन में आनंद प्राप्त होगा। जिसे जो करना हो वह करे। मुझे तो हमारे भगवान रास्ता बताकर गये है। केवल ! उस मार्ग पर चलना है। मुझे तो केवल स्वामिनारायण, स्वामिनारायण........

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की | **प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की**

रुपरेखा

(सितम्बर-२०२४)

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, श्री गणेश चतुर्थी की पूजा-आरती के हेतु पधारना।

१४ जलझिलणी एकादशी को श्री गणपतिजी के वरघोडामें पधारना।

१८ पूर्णिमा के सत्संग सभा में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पधारना।

२८-३ अमेरिका के I.S.S.O के मंदिरो-चेप्टरो में सत्संग सभा करके स्वदेश आगमन।

१४ जलझिलणी एकादशी को श्री गणपतिजी के वरघोडा में पधारना।

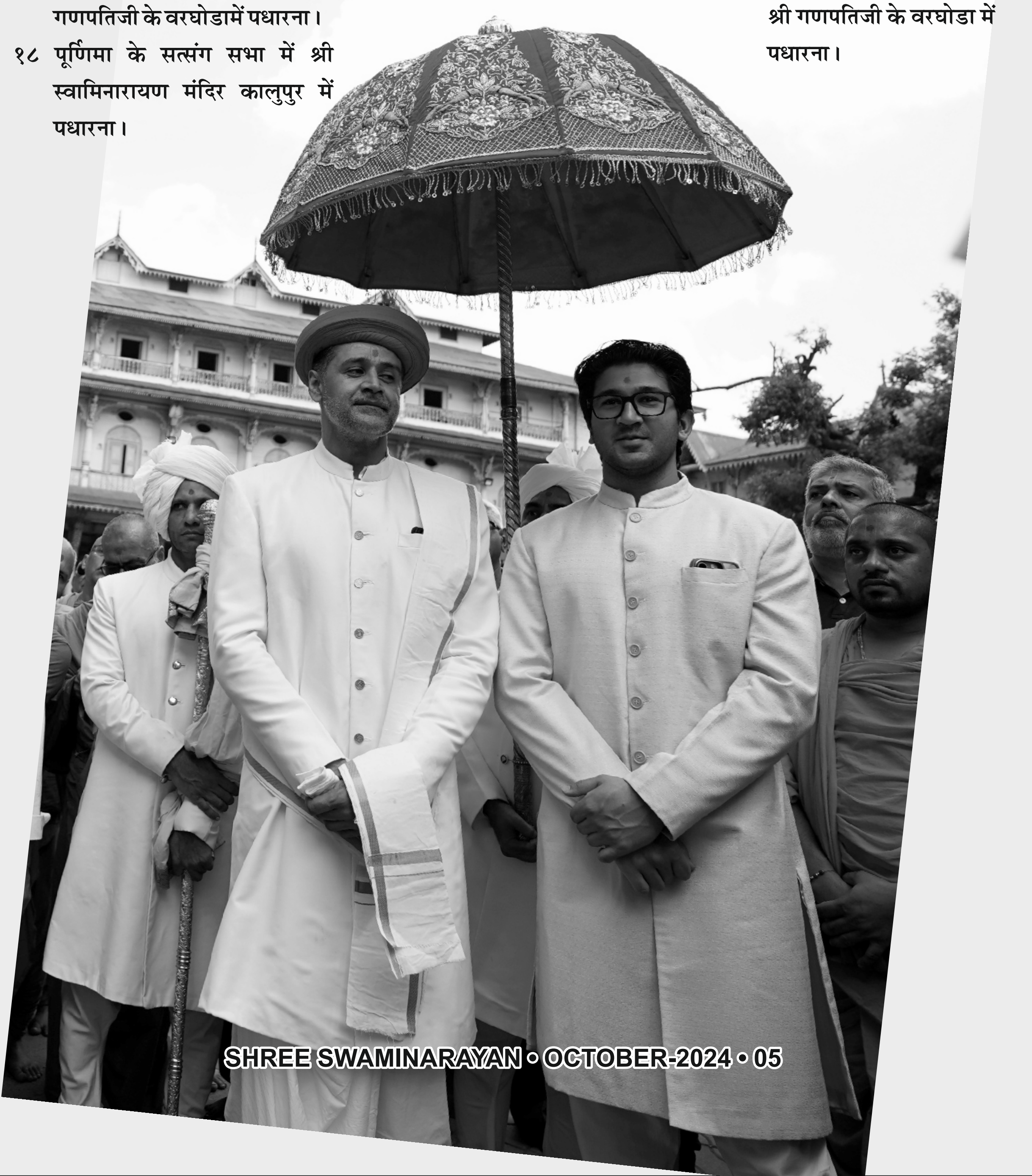

मेहमान को जलपान कराये

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

हमारी संस्कृति की परम्परा में बाहर से आने वाले मेहमान को तत्काल शीतल जल पिलाया जाता है। पुराने समय में लोग पैदल आते–जाते थे। इस कारण से उनको गुड के साथ जल दिया जाता है। आगंतुक पहचान वाला हो या नही भी हो उसे जल अवश्य पिलाये। दूसरे कोई स्वागत में पूछकर देते है। किसी को अल्पाहार या भोजन पूछते है। लेकिन मेहमान के आने पर पानी से भरा लोटा पहले लाते है। जब हमारे घर मेहमान आते है तो हमे विचार आता है कि मेहमान को प्यास लगी होगी। रास्ते में पानी नही मिला होगा। उन्हे प्यास अधिक लगी होगी। यह सब छोडकर मेहमान को पानी पीलाकर मेहमान को खुश करने का प्रयास करते है। प्राचीन पम्परा। आज बदल रही है। पैदल यात्रा के स्थान पर बाहन का चलन अधिक हो गया है। घर के सामने गाडी आकर खडी हो जाती है। अथवा सार्वजनिक यात्रायात के साधन का उपयोग करते है। अब पैदल चलने की स्थिति न गण्य हो गयी है। गाँव के सीमा हो या सोसायटी के गेट से चलना पडता है। रास्ते में मेहमान को जल मिले इसका ध्यान नही रखना पडता है। अब तो पानी की बोतल साथ में रखते है। अब मेहमान को अलग से पानी देने की आवश्यकता ही नही पडती है। फिर भी मेहमान को आते ही घर की व्यवस्थानुसार जल दिया जाता है। एक घर पर पानी रख ही दिया जाता है। इसके बाद वातचीत शुरु होती है। आश्चर्य यह होता है कि इस समय मेमहान को जल नही चाहिए। पिर भी रीत–रिवाज में परिवर्तन नही आया है। आज भी पानी की मिठास तुरंत आ जाती है। यह विषय समझने योग्य है। इस रिवाज पर संशोधन (खोज) की आवश्यकता है। हमारी संस्कृति में रीत रिवाज अपने पूर्वजो तथा ऋषि मुनियो का ज्ञान आज के समयानुसार अति उत्तम तथा वैज्ञानिक रुप वाला था। उनकी दृष्टि में दिव्यता थी। आज जो हम यंत्र से दूर तक देख सकते है। वे प्राकृतिक दृष्टि से निवारण कर देते थे। आने वाले मेहमान तथा मेजबान के हित में रीत रिवाज प्रारम्भ किया गया था। हमारे ऋषि मुनि कहे है कि बाहर से आने वाला मेहमान रास्ते से सकारात्मक तथा नकारात्मक आवरण को पार करके आते है। एक देश से दूसरे देश में प्रवेश पाने के लिये राजा की अनुमति लेना पडता है। रास्ते में कई आवरण आते है।

इस पृथ्वी के उपर स्थूल – सूक्ष्म आवरण होता है। प्राचीन काल में राजा रजवाडो का स्थूल आवरण था। उसी प्रकार सुर, असुर, सात्विक, मलिन, तंत्र, मंत्र, जंत्र, भूत, प्रेत, आसुरी और आध्यात्मिक सूक्ष्म रुप से कब्जा करने वाली शक्तियाँ थी। उसमें प्रवेश करना सहमति विना अधिार नही मिलता है।

लेकिन मानव शरीर अन्य शरीर से श्रेष्ठ बताया गया है। सूक्ष्म सृष्टि का आवरण–मानव सृष्टि को अपने अधिकारीक क्षेत्र में प्रवेश करने से रोकती नही है। लेकिन सकारात्मक तथा नकारात्मक ऊर्जा उसे कष्ट दे सकती है। आने वाला मेहमान ऐसी कई अवस्था में से गुजर कर अपने घर पर आता है। इस प्रभाव के नीवारण हेतुमेहमान की नकारात्मक ऊर्जा परेशान न करे। अतवा दूषित भी नही करे। इसके लिये अपने

पूर्वजो ने सरल उपाय दिये है। मेहमान को शीतल जल पिलाने से मार्ग में आने वाले सभी दोष जलपान से शांत हो जाते है।

इस लिये अपने घर में मेहमान या शत्रु भी आये तो उसे ठंडा जल अवश्य पिलाये। हमे उसके सामने जल से पूर्ण गिलास अवश्य रख देना चाहिए। तत्पश्चात मेहमान के जाने के पश्चात जल को बाहर या जलनिकास की जगह पर डाल देना चाहिए। क्योकि आदरणीय जल में नकारात्मक ऊर्जा छोडकर जाते है। पुरानी कहावत है कि लोग कहते है कि उसने तो हमे पानी के भाव भी नही पूछता सत्संगि के घर जल पीने से कल्याण होता है। यह सम्प्रदाय के ग्रंथो मे लिया है। अब बताये, आप सभी मेहमान को जलपान करायेगे। चाहे वह घर हो या कार्यालय या सार्वजनिक स्थल वहाँ पर जलपान की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए।

सगा हो या दूर का हो आप इतना अवश्य करे। इससे आप का घर सुरक्षित रहेगा।

लेकिन ध्यान रखे। यह सब बाते आने वाले मेहमान को बताना नही चाहिए। नही तो काम बिगड जायेगा। केवल मन में रखना चाहिए।

श्रावण वद-८ जन्माष्टमी के यशश्वी यजमानश्री

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की प्रसन्नता के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल के खुशी से अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्रावण वद-८ जन्माष्टमी के यजमानश्री अ.नि. पटेल महेशभाई प्रहलादभाई, गं.स्व. पटेल चम्पाबेनमहेशभाई (डांगरवावाले - वर्त. राणीप) तथा अ.नि. बलदेवभाई जीवणदास पटेल - ह. अश्विन बलदेवभाई पटेल, कोकिलाबेन बलदेवभाई पटेल (मेघाणीनगर वाले)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा (यु.पी.) के नये महंतश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा (यु.पी.) के नये महंत स्वामी स.गु. स्वामी श्री श्यामसुंदरदासजी गुरु स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी तथा स्वामी व्रजभूषणदासजी गुरु स्वामी श्यामसुंदरदासजी (मूली) को नियुक्त किया गया है।

नये वर्ष के कैलेन्डर - दट्टा प्रकाशित हो चुके है। शीध्र प्राप्त करले

अहमदावाद श्री नरनारायणदेव देश द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा उन्होने पसंद किये गये।अलौकिक दर्शनीय सुंदर नये वर्ष का कैलेन्डर प्रकाशित हो गया है। (अपने छोटे-बडे मंदिर में यही कैलेन्डर बनेगा कुछ परिव्रतन नही किया जायेगा) यह अपने मंदिर में मिलेगा। नये वर्ष का दट्टा प्रकाशित हो गया है। समय से ले ले तथा मंदिर के लिये जो हरिभक्त कैलेन्डर बनवाना चाहते है वह निम्न मोबाईल पर सम्पर्क करें।

कालुपुर मंदिर कोठार आफिस
बालु स्वामी मो. : ९४२७०७०३७१
श्री सुरेशभाई मो. : ९१७३०८९०३०
श्री जमालभाई मो. : ७९९०५१९४७८
मंदिर के लिये रु।. ८-०० मूल्य

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल
श्री विपुलभाई मो. : ९७२५४४९२८८,
श्री प्रयागभाई मो. : ९४२९०६७५८४
विज्ञापन के लिये रु।. १०-०० मूल्य

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से

आशीर्वचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर, धोलका के १९७ वे वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ता. २८-०५-२०२४ : आशीर्वाद तो भगवान देते है। जिसके कारण हम और आप है। हम सभी है। कोई आशीर्वाद लेने की शैली तो नही है। लेना और देना है।

मुरली मनोहरदेव जिस देव की प्रतिष्ठा महाराज स्वयं किये है। अभी भुज में बताये थे। समयनुसार कुछ ना कुछ मंदिर में चलता रहता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि विहारीलालजी महाराज का पहले तीन वर्ष का वडताल देश का निर्णय जो है। सब धोलका मंदिरकी प्रतिष्ठा में लिखा गया है।

गोपालानंद स्वामी का जो पत्र अपने म्यूजियम में है। लेकिन कष्ट यह है कि हम सभी मोबाईल में व्यस्त हो गये है। पूरे दिन मैसेज भेजते रहते है। प्रातः उठते ही जय स्वामिनारायण। वो भी फारवर्ड किया गया होता है। मैने तो निश्चित किया है जो जय स्वामिनारायण भेजेगा। उसे ब्लोक कर देगे। आप स्वयं एक माला करे। हमारी जय भगवान के द्वारा होगी। हमारे द्वारा भगवान की जप कैसे होगी ? सम्बोधन तथा आपस में मिले तो भगवान का नाम ले। आप देखे होगे कुछ लोग जय माताजी जयश्री कृष्ण, हम सभी जय स्वामिनारायण कहते है। खराब नही लगे। ऐसा निष्टाचार अवश्य करना चाहिए।

महाराज अंतर्ध्यान हुए। उसके पश्चात लगभग आठ–नव महिना के बाद पत्र अयोध्याप्रसादजी दादा को सम्बोधित करके लिखे है। उस समय अयोध्याप्रसादजी दादा वडताल में थे। ये पत्र अपने ''श्री स्वामिनारायण'' मासिक में छपा है। जो हम पढने का कष्ट नही लेते है। यह सब इतिहास अपने

पास है । यह अपनी धरोहर है । दूसरे स्थान पर दंतकथा ये अधिक मिलेगी । प्रसादी के तीर्थधाम में जाये तो कितने गोखले होते है ।आप को देखे है ? यहाँ पर भगवान इसतरह बैठे ये । पलथी मार कर बैठे थे । यहाँ पर पैर रखे थे । लगता है कि भगवान को कोई दूसरा काम ही नही है । ऐशी दंतकथा लोग बताते रहते है । हनुमानगढी सदियो से वही है । लेकिन अगल-बगल कितने मशाले है । आप को उठा ले । आप को अपने अनुसार काम करने के लिये प्रेरित करते है । कमजोर व्यक्ति बात मान भी जाते है । कुछ लोग डर भी जाते है । बहनो का स्वभाव तुरंत मान भी जाती है ।कुछ खराब न हो जाये । दुनिया ऐसे रहती है ।

लेकिन अपने पास एक एक वस्तु को नंद संतो के द्वारा लिखा इतिहास है । सत्संगिभूषण हो, सत्संगिजीवन हो आधारानंद स्वामी का ग्रंथ हो । जिसमें महाराज की रोजनामचा लिखा गया है । प्रतिदिन की डायरी है । महाराज कैसे हंसते थे । बोलते थे । चलते थे । कब उठते थे । कब जागते थे । कब क्या भोजन करते थे । किस संत के साथ क्या बात किये थे। कैसा-कहाँ पर उत्सव किये । इस सब का इतिहास अपने पास है । इससे हम सभी गर्वान्वित होते है ।

शुकमुनि महाराज लहिया संत थे । लिखने की जो सेवा दे उसे लहिया कहते है । उस समय प्रिन्टर०टाईप मशीन नही थी । आज की तरह कलम भी नही थी । वनस्पति में से स्याही बनाई जाती थी । उसे कलम से लिखा जाता था ।

गोपालानंद स्वामी का यह उत्तर मुक्तमुनिने शुकमुनि द्वारा लिखवाया । इसमें स्पष्ट लिखा है कि धोलका में जो मूर्ति है । यह महाराज द्वारा स्पर्श की गयी है । सेवा की गयी प्रसादी की मूर्ति है । अयोध्याप्रसादजी दादा को तो ज्ञान था । कि यह एक पत्र व्यवहार है । इसमें यह उल्लेख कही न कही गेर समझ हो जाती थी । मै भुज में था । निश्चित किया की धोलका जाना है । महाराज जिसकी आरती उतारे हो । थाल रखे हो । स्पर्श किये हो । सेवा दिये हो । ऐसी प्रसादी की मूर्ति का दर्शन-अभिषेक का लाभ कहाँ से मिला ? इस लिये मै सीधे यहाँ पर आया हूँ।

इससे आगे जाये तो इ.स. १९५० में भारत देश का संविधान लागू हुआ । इस बात को सभी लोग जाने इस लिये कह रहा हूँ । वायरल होने पर सभी को ज्ञात हो जायेगा । वैसे कई प्रकार की वस्तु वायरल होती रहती है । मुझे महंत स्वामीने एकादशी को भेजा था । फुलहारी आटा में मिलावट-गलत बोलना इससे अच्छा स्पष्ट कहने में आनंद है । हरिप्रिय स्वामी ने सरढव में अच्छी कथा कहे थे । वे और उनके गुरु इतिहास जातने है । इतिहास का ज्ञान हो उसके सामने बात करने पर आनंद आता है ।

ई.स. १९४७ में देश आजाद हुआ । आजाद हुआ ? आजादी मिली ऐसा कहा जाता है । १९५० में ट्रस्ट एक्ट आया । गुजरात-महाराष्ट्र तब एक था । महागुजरात था । उस समय सम्पत्ति का व्यौरा खोल कर रख देना था । पहले यह सभी सम्पत्ति आचार्य की थी । आज भी देश विभाग के लेख के आधार पर सभी मंदिर, पेड-पौधे, काटा-कंकड जो कुछ है आचार्य की व्यक्तिगत सम्पत्ति है । इसमें कोई साधु, संत, ब्रह्मचारी या हरिभक्त दावा नही कर सकता है । ऐसा लिखा गया है । लेकिन हमे कुछ नही चाहिए । दो जून के भोजन के अलावा क्या चाहिए ? जो खाये है उन्हे मधुमेह तथा कोलेस्ट्राल बढ गया है । दूसरा क्या होगा ? उस समय की स्वैच्छिक **Disclosure** की जो स्कीम है । उस पर सुप्रीम कोर्ट ने ईन्वर्ड नम्बर वाली कापी अपने पास है । कहे तो दिखादे । इस में अपने नव मंदिर में से धोलका मंदिर का भी उल्लेख है । वास्तव में इनस बारे में हम लोगो को ज्ञात नही है । यह बात हमे सभी को बताना है । हम कमजोर बनकर बैठ जायेगे तो दूसरे को क्या कहेगे ? स्वाभिमान होना चाहिए । हमे भगवान जैसे भगवान मिले है । ऐसे देव मिले है । तो शेष क्या

बचता है ?

हम सभी भाग्यशाली है । सर्व प्रथम अहमदाबादमंदिर बना । इसके पश्चात मूली बनी । जिसका २०० वर्ष का उत्सव अभी पूरा हुआ । जो छ मंदिर में नही आता है विडियो वायरल करे । विडियो चलाना । जिसे-जिसे दुख हो होने देना । सुखी होना हो तो सुखी रहे । मैं प्रमाण सहित दूँगा । मूली में रामाभाई राजाने प्रार्थना किया । उनके घर से पर सत्संगि थी । महाराज मांडवरायजी के मंदिर में दोनो तरफ हाथी पर बैठकर हाथ उपर करके खडे रहे । हाथ पहुँचे ऐसा नही । लेकिन इतिहास में है । इस लिये मूली बना । (मूली प्रतिष्ठा) महोत्सव स.जी.प्र.-४, अ.-४४) इसके बाद भुज आया । बाद में वडताल आया । जेतलपुर, धोलेरा, धोलका, जुनागढ और अंत में गढडा । यह सभी इतिहास है । वैसे हम सभी पहरले थोडे तो गरीब थे । उज्जड प्रांत झालावाड, कच्छ, अहमदाबाद इसमें भी उत्तर गुजरात में किसी तरह लाभ था । लेकिन गांधीगनर आ गया अच्छा हुआ । बात ऐसी है कि अयोध्याप्रसादजी दादा उदास हो गये । ऐसा नही है । सत्य है महाराज ने विभाग की बात किया । और सामने से महाराज बोले यह सूखा नहीं है । मैं आप लोगो के साथ हूँ । आप विचार करे । अयोध्याप्रसादजी दादा जो पूजा करते थे । वह तीन मिनट की पूजा नही थी । दादा माला फेरने के साथ घंटे दो घंटे की पूजा करते थे । पूजा पूर्ण होने के बाद पार्षद से बोले कि देखो । वरामदे से कुछ, काट रहा है । पार्षद खेश लेकर देखा उसमें बिच्छु था । तथा डंक मार रहा था । महाराज के साथ एकात्मकता साधकर, शरीर की विस्मृति के साथ इसी प्रकार जो पूजा करते है वह सुखे प्रदेश से दुखी हो जाते है । यह कैसी खराब बात है । ढक्कन में पानी नही लेना चाहिए ।

पुस्तक पढते हैं, महंत स्वामी ! पत्र है ? कौन सा पत्र है? लाईये, यह पत्र विवादास्पद है । जो सब कुछ बदल दे । पढकर कई लोग स्तब्ध हो सकते है । हमे किसी से विरोध नही है । मेरा नियम यह है कि किसी की श्रद्धा पर ठेस नही आये। लेकिन आपने किसी का खराब नही किया है । महाराजने कहा है कि भगवान का कही भी खंडन हो रहा हो तो उसमें भाग नही लेना चाहिए । उत्तर दे देना चाहिए । अन्यथा वहाँ से हट जाना चाहिए। फरहारी आटे वाले नही है कि जो भूख से मर जायेगे । सत्य बात है न ? इस पत्र को पढने से बहुत कुछ ज्ञात होगा । कई तरह के प्रश्न पैदा होगे । कहने योग्य था वह कह दिया है । जिससे पढना हो । वह एक किनारे बैठकर पढ सकता है । आप को जानकारी होनी चाहिए। अपने बाप कौन है ? कहाँ से आये है ?

इतिहास को अधिक खंगाले नही इतिहास भूलना भी नही चाहिए । तो वर्तमान में सुखी रहेगे । हम युवको से बार-बार कहते है । हम लोग खेत में पानी डालते थे । ऐसा करते थे । वैसा करते थे । तो लोग कहेगे । छोडिये जो आप करते थे । करते रहे होगे । घर जाने के पश्चात एक ही बात की पंचायत ! आप अपने समयमें अपना किये । हमें हमारे समय का सुख लेने दे । हम गाडी से धुमते है । भूतकाल में साईकिल के चेन उतर जाती थी । तेल लगाकर जानी पडता था । यह याद आने पर गाडी का सुख मिलेगा । लेकिन किसी के चौडे टायर वाली गाडी देखकर दुःखी नही होना चाहिए । इससे अपनी गाडी का सुख नही अच्छा लगेगा । बापजी कई बार पुरानी बाते करते है । मैं सुनता हूँ । कुछ नया ज्ञानमिलता है । वृद्ध तथा ज्ञानी के पास अनुभव का ज्ञान होता है । उनसे इतिहास का ज्ञान मिलता है । छोटे से छोटे बच्चे से सीखा जा सकता है । गुण बुद्धि रखने पर सत्संग में सुख मिलता है ।

आप सभी के साथ सहयोग से ये महंत स्वामी एस.एस. स्वामी सब कुछ विकास किये है । हरा भरा हो गया है ।ठहरने की व्यवस्था होने पर मैं आया हूँ । शेष और बनेगा । मै आने वाला भी हूँ । वर्षा समाप्त होने के बाद गाँव गाँव मे जाना है । मूल में जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी मातृभूमि को नही भूलना चाहिए ।

महाराज की जन्म भूमि छपैया सर्वश्रेष्ठ धाम है। २२० करोड का प्रोजेक्ट चल रहा है। भगवान के भक्त तो वहां जाते है। पूरा गाँव वहाँ पर पैसे से जाता है। भगवान बनकर बैठे है। लोग वहाँ पर आते है। बाद में अपना फोटो रखकर स्वयं आरती करते है। लेकिन छपैया गये बिना छुटकारा नही है। कारण अंदर से भय होती है।कि वह जन्म स्थान हमारे पास है। शेष क्या रहा है शेष कुछ भी नही है। इसलिये आनंद मे रहे। मर्यादा में रहे।

अपने भाग्य में इतना नही लिखा था। लेकिन सुखी बने इसका कारण यह है कि अपनी कुंडली इस भगवान के साथ जुडी है। हम कई बार कहते है कि किसी सामान्य घर की बच्ची की शादी उच्च घर में हो जाने के बाद उसे अधिकार माँगना नही पडता है। वह स्वत: धनवान हो जाती है। इसी प्रकार हम लोगो के मालिक जो है। इतने शक्तिशाली है कि हम सभी छाती चौडा करके धुमते है। शेष तो गाडी की पहिया भी हाथ नही लगे। दो जून का पूरी हो। यह हमारे और आप के भाग्य में इतना ही नही लिखा गया है। लेकिन कुण्डली भगवान से जुडी है। इस लिये सब कुछ परिपूर्ण अवस्था में है। हम सभी ऋणी है। यह शब्द गरीब कहा जाता है। इतना ध्यान रखे जो कुछ भी है। वह भगवान का दिया हुआ है। स्थायी नही तो कभी वार-त्यौहर पर अवश्य याद आता है। कि वह निवाला भगवान की कृपा से मिला है। तो भी अच्छा कार्य हो जाये।

धोलका के आस-पास सभी को बुलाकर धर्नुमास के पहले एक आयोजन करिये। कुछ भी करे ? अपना सम्प्रदाय उत्तम समैया वाला है। हम लोगो से सरकार भी सिखती है। हमे किसी प्रकार भगवान का नाम लेना है। लड्डू खाये और आनंद करे। शेष इतना ही करना है। धोलका देश के अन्दर से सात गाँवो का जीर्णोध्धार हुआ है। वहाँ पर जाकर सभा यही पर करेगे। लोग बैसे भी लारी गल्ले पर पकौडी खाने जाते है। हम लोगो को सुंदर मुरली मनोहर देव मिले है। मंदिर में देव का दर्शन करे। बाद में वाडी में पिकनिक मनाये। परिवार के साथ बैठकर मजा करे। माला जितना करेगे। उतना अच्छा है। लेकिन उसी के साथ व्यवहार, सम्बन्ध, लगाव, यह सब एक साथ आता है। यह अवसर मिले तो अवश्य ले। मैं अभिषेक के वस्त्र को बदले बिना सभा में बैठा हूँ। स्वामीने कहा वस्त्र मत बदलिये ? मैने कहा मैं तो वैसे का वैसा ही रहने वाला हूँ। अन्तर क्या होगा? ग्रामीण जाने लगे उससे पहले सभा आरम्भ कर दे।

आप सभी हरिभक्त दर्शन करे आये है। भगवान की प्रसादी खाइयेगा। और भगवान की दो बाते करियेगा। यजमान परिवार को मै जानता हूँ। अच्छी सेवा देते है। आप सभी का भगवान मंगल करे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणोमें प्रार्थना करता हूँ।

अहमदाबाद मंदिर द्वारा हरि मंदिरो के लिये शुद्ध और पवित्र बनाया गया अन्नकूट

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के सभी हरि मंदिरो के कोठारीश्री को ज्ञात कराते आनंद आता है कि प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से नये वर्ष के ठाकुरजी का अन्नकूट अपने कालुपुर मंदिर द्वारा पू. महंत स्वामी और संतो की देखरेख में शुद्ध एवं पवित्र बनाया जा रहा है। जिससे अपने छोटे-बड़े हरि मंदिरो के कोठारी श्री अपने हरि मंदिरो के लिये अन्नकूट बनवाना हो तो दिपावली से पूर्व अपने मंदिर के आवश्यकतानुसार आदेश दे। एवम् रुपया जमा कराके रसीद प्राप्त करे।

सम्पर्क - कालुपुर मंदिर कोठार आफिस

कोठारी बालु स्वामी - ९४२७०७०३७१ ● सुरेशभाई - ९१७३०८९०३०

सादरा-वासणा देश अपने हरिमंदिर तथा प्रसादी के स्थल

- बिपीन पटेल (गांधीनगर)

प्रभु तव मूर्ति विनोद कारी
पल पल विसरे नही ते विसारी
जुगल चरण मां सोल चिन्ह जेह
नजर समीप रहो अमारी तेह

श्रीहरि के पवित्र चरणो से अंकित उत्तर गुजरात के ''सादरा वासणा'' देश की यात्रा करते करते हम पहले के लेख में महादेवपुरा, महुन्द्रा और ईसनपुर (बड़ा) गाँव में आये हरि मंदिरो का महत्व बताये है।

आइये अपनी यात्रा को अग्रसर करते महाप्रसादीभूत ऐसा नांदोल, सलकी, वर्धा के मुवाडा का महात्म जानते है।

ये तीनो स्थल खारी नदीकेकिनारे स्थित है। इस नदी में श्रीजी महाराज स्नान करके गंगा तुल्य किये। नदी में एक पत्थर के उपर बैठकर स्नान किये थे । नदी के किनारे महादेव का मंदिर है। वहाँ पर महाराज दर्शन करके विश्राम भी किये थे। अपने धार्मिक ग्रन्थो में इसका उल्लेख मिलता है।

इस गाँवो में सद्‌गुरु गोपालानंद स्वामी खुशाल भट्ट रुप में पधारे थे । इन तीन गाँवो की महिमा अपरम्पार है। आइये इन तीन गाँवो की विस्तृत महिमा जाने।

गांधीनगर से चिलोडा होकर देहगाम रोड पर जाने पर बाये हाथ पर नांदोल गाँव आता है । गांधीनगर से नांदोल ३५ कि.मी. दूर है।

(१) नांदोल : गाँव में प्रवेश करते ही गाँव की भव्यता और समृध्धि का एहसास होता है । इस गाँव में मुख्यतया पाटीदार लोग रहते है । पाटीदारो का मुख्य व्यवसाय कृषि है। पानी का जलस्तर अच्छा होने के कारण खेती अच्छी होती है। गाँव में दो मंजिलका हरि मंदिर स्थित है। गाँव में सर्व प्रथम छोटा मंदिर हरिजीवनदास स्वामीने बनाया था। समय वितने के साथ उसका जीर्णोद्धार १५ वर्ष पूर्व ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदाजीने करवाया था । तभी सिंहासनमें यह मूर्तियाँ बनाई गयी है। इसके पश्चात लक्ष्मणजीवनदासजी स्वामीने सिंहासनमें संगमरमर की सुंदर मूर्तिया बनवाई सिंहासन पर नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव और श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा ता. १३-५-२०१८ के दिन किया गया था। अति नयनरम्य विराजमान देव का दर्शन करके धन्यता का अनुभव होता है।

आइये इस गाँव का इतिहास से जुडे कई शास्त्रो के आधार पर आनंद ले।

नांदोल के घनेश्वर त्रावडी : नांदोल के घनेश्वर त्रावडी को संतान नही होने के कारण अपने धर्म पत्नी के साथ काशी में रहकर १२ वर्ष तक गायत्री का अनुष्ठान किये। वहाँ पर माता गायत्री ने दर्शन दिया तथा बोली कि आप गढडा जाईये । वहाँ पर साक्षात् भगवान का दर्शनक रे। वह गढडा आकर श्रीजी महाराज के आश्रित होकर देह पर्यन्त तक भगवान का भजन करके श्रीजी महाराज के धाम में गये। उन्हें श्रीजी महाराज लेने आये थे । ऐसा दिव्य दर्शन गाँव वाले किये थे । (संदर्भ : सहजानंद स्वामी चरित्र वार्ता-१६३)

खुशाल भट्ट का नांदोल में आगमन : खुशाल भट्ट नभोई गाँव में पढने आये थे । तभी उनका सर्वेश्वरानंद साधु से सम्पर्क हुआ। वे दोनो लोग नांदोल में प्रभुराम के घर भोजन किये थे। वहाँ से भोजन करके उभाण गाँव में आये थे। (निर्गुणदास स्वामी की बाते-

२२४)

श्रीहरि का नांदोल में आगमन : संवत १८६१ के वर्ष में श्रीहरि, संत-पार्षदो के साथ जेतलपुर से निकलकर गामडी होकर नांदोल आये थे । वहाँपर भक्तो को दर्शन सुख देकर सलकी होकर प्रांतिज पधारे थे। (स.गु. प्रसादानंद स्वामी की बाते विश्राम-१३)

नांदोल के गोविंदराम : नांदोल के पुराणी गोविंदराम द्वारिका में लगभग भागवत का सात पारायण कराये थे । तब रणछोडजी खुश होकर दर्शन देकर बोले, आपको मांडवी में साक्षात् भगवान मिलेगे। इस लिये वे मांडवी में आये । वहां पर श्रीहरिने खैया खत्री से शास्त्रार्थ करके अपना परिचय दिये । ऐसा दर्शन गोविंदराम को मिला । वैसे श्रीहरि के ऐश्वर्य दर्शन खैया खत्री, गोविंदराम तथा सभी भक्तो ने किया । गोविंदराम तभी से श्रीहरि के आश्रित बन गये । जीवन भर भजन करके धाममें गये । (श्री स्वामिनारायण संहिता अध्याय-४६)

(२) सलकी : सलकी गाँव गांधीगनर से होते हुए । वाया चिलोडा २५ कि.मी. की दूरी पर सथित है । और् नांदलो से ३ कि.मी. दूरी पर है । खारी नदी के किनारे छोटा सा गोकुल गाँव है । यहाँ पर हरि के चरणो से अंकित छोटा सा हरि मंदिर है । श्रीहरि वहाँ के चबूतरे पर आराम किये थे । भक्तो को दर्शन का सुख दिये थे। आज भी भक्तो को सुख देते है । श्रीहरि संवत १८६५ में सलकी आये थे । वहाँ पर दयालजी भक्त के गली में सभा किये थे ।

सलकी में ब्रह्मचोर्यासी किये : श्रीहरिने नानाभाई भक्त से बोले कि हे भगत हमें नंदोल के ब्राह्मणो के लिये चोर्यासी करना है। उसी समय मूलीज ब्रह्मचारी तथा जेराम ब्रह्मचारी को सेवा सौप दिये । ब्राह्मणो को आमंत्रण दिया गया । ब्राह्मणोने महाराज का दूध पूछा ? तब महाराजने कहा आप को दुःखकी क्या आवश्यकता है । ब्राह्मणोने भोजन के लिये मना कर दिया । सभी भोजन मुवाड के ठाकोर लोगो को बुलाकर खिला दिये । (स.गु. प्रसादानंद स्वामी की बाते विश्राम-१७)

श्रीहरि का सलकी में आमगन : संवत १८६१ में अहमदाबाद से वहेलाल होकर, श्रीहरि सलकी गाँव में आये थे। वहाँ से प्रांतिज होते वीजापुर पधारे थे । (स.गु. प्रसादानंद स्वामी की बाते विश्राम-१८)

संवत १८६१ मं दूसरे बार वडताल से उमरेठ, डाकोर, तोराणा, आंतरोली, सिंगाली, ऊंटडिया महादेव होकर सलकी आये थे । वहाँ पर दयालजी भगत के गली में आये थे । प्रातः खारी नदी में स्नान किये थे। महाराज पाँच दिन सलकी में रहे थे। तत्पश्चात प्रांतिज गये थे। सलकी मे भक्तो को खूब सुख दिये थे । (स.गु. प्रसादानंद स्वामी की बाते विश्राम-१३)

इस प्रकार श्रीजी महारजा सलकी में चार बार पधारे थे । इसका वर्णन कई शास्त्रो में है । खोखरा-महेमदाबाद में भी सलकी के दयाल पगी ने शूरवीरता पूर्वक गोमतीपुर के बैरागी के सामने लडे थे । धर्म के लिये युद्ध किये थे ।

सलकी के भक्तो और् श्रीजी महाराज की लीलाये कई है । यह अल्प मात्र लिखी गई है ।

(३) वर्धा का मुवाडा : वर्धा का मुवाडा गाँव गांधीनगर से वाया नांदोल लकी होकर ३० कि.मी. दूर है। खारी नदीके किनारे स्थित है ।

श्रीजी महारजा के परम एकांतिक भक्त वर्धाभाई के नाम पर इस गाँव का नामकरण श्रीजी महाराज किये थे ।

गाँव में प्राचीन मंदिर १०० वर्ष प्राचीन है । वर्तमान में कोई इतिहास नही है । इस मंदिर का नवीनीकरण किया गया है । हाल के प्रवेशद्वार पर विशाल चमत्कारी

हनुमानजी विराजमान है। गांव में नया श्री स्वामिनारायण मंदिर, सांख्ययोगी निताबा (भुज) के अथक प्रयास से नया भव्य हरि मंदिर में ठाकुरजी के स्वरुपो की प्राण प्रतिष्ठा ता. ३०-३-१२ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के करकमलो द्वारा पूर्ण किया गया। सिंहासन पर संगमरमर की सुंदर प्रतिमा के रुप में श्री नरनारायणदेव, श्री घनश्याम महाराज और श्री राधाकृष्णदेव दर्शन दे रहे है। मंदिर के दिवाल के उपर गाँव में ठाकुरजी की लीलाओ का सुंदर चित्रण किया गया है। वर्धाभाई के यहाँ ठाकुरजी दही रोटी खाये थे। उन पर खुश होकर श्रीहरि दो जोडी चरणारविंद दिये थे।

गांव में स्थित महाकाली माताजी के मंदिर पर श्रीजी महाराज विश्राम किये थे। इसका उल्लेख शास्त्रो में है। यह गाँव सत्सग समाज के लिये। दो संतो की भेट भी किये थे। इसमें हरिप्रिय स्वामी और घनश्याम स्वामी तथा सांख्ययोगी माता नीताबा आज भुज में रहकर ठाकुरजी की सेवा करती है।

आइये अब शास्त्रो के आधार पर गाँवके महिमा के बारे में जाने।

श्रीहरि का आगमन : खारी नदी के किनारे बीहडो में काली माँ का प्राचीन मंदिर है। वहाँ पर श्रीहरि अकेले आये थे। मंदिर में श्री गणपतिजी, श्री हनुमानजी विराजमान है। श्रीहरि के सेवा में हनुमानजी प्रगट हुए थे। वे आज भी मंदिर के बाहर खडे है। और भक्तो को इस स्थिति में दर्शन देत है। श्रीहरि वहाँ वर्धा के मुवाडा गाँव में वर्धाभाई के घर पधारे थे।

संवत १८६१ में जेतलपुर से गामडी, नांदोल, सलकी होकर वर्धा मुवाडा पधारे थे। वहाँ पर उनके स्वागत हेतु मूलजी ब्रह्मचारी और दयालभाई आये थे। (स.गु. प्रसादानंद स्वामी कीबाते विश्राम-१३)

वर्धा के मुवाडा में प्रसादी स्थल :

(१) श्री कालिका माताजी का मंदिर तथा श्रीहनुमानजी महाराज
(२) वर्धाभाई का घर
(३) चरणारविंद के दो जोडी
(४) काकरिया कोठा तथा खारी नदी

श्रीहरि की लीला अपरम्पार है। यह शब्दो मं वर्णित नहीं की जा सकती है।

जलझीलनी एकादशी श्री गणपति जीके वरघोडा के यजमानश्री

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के खुशी के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल की खुशी से अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री गणपतिके स्थापना के यजमान प.भ. कौशिकभाई सी. जोषी अहमदाबाद जलझीलनी एकादशी के यजमान प.भ. नागजीभाई नानजीभाई शिंगाणा - ह. प्रकाशभाई, अमितभाई, चिरागभाई, नवा निकोल, श्री गणेश उत्सव के बीच गणपतिजी को गुड के लड्डू के थाल का हरिभक्तोने लाभ लिया।

भाद्र सुद-१५ (पूर्णिमा), धर्मकुल गुरु पूजन के यशश्वी यजमानश्री

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के खुशी के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल के खुशी से अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर, पू.म हंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से भाद्र मास सुद पूर्णिमा के यशस्वी यजमान एक हरिभक्त।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

अपने श्री स्वामिनारायण म्युजियम में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी धनतेरस के दिन हाल नं. ८ में श्री लक्ष्मीजी की पूजा की जायेगी । जिस में प.पू. बड़े महाराजश्री के द्वारा चाँदी के सिक्को का पूजन अर्थात् धन पूजा की जायेगी । और ये प्रसादी के सिक्के म्युजियम में साहित्य केन्द्र पर ईच्छुक हरिभक्त प्राप्त कर सकते है ।

इसके पश्चात दूसरे दिन काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी की पूजा की जायेगी । जिसका लाभ हरिभक्त ले सकते है ।

दिवाली और नये वर्ष के अवकाश में अपने म्यूजियम में अधिक भीड होती है । तो दिवाली के अवकाश के समय म्यूजियम में डीजीटल टेक्नोलाजी का उपयोग करके नये कल्प दिखाये जाते है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री यज्ञ पूजन की सूची - सितम्बर-२४

ता. ०१-०९-२०२४	श्री स्वामिनारायण म्युझियम आयोजीत समूह महापूजा ।
ता. १५-०९-२०२४	अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी की याद में सेक्टर-२३ स्वामिनारायण मंदिर सत्संग समाज - ह. शास्त्री स्वामी हरिप्रियदासजी - गांधीनगर ।
ता. १६-०९-२०२४	श्री प्राप्ति ऋत्विज पटेल - नारणपुरा - प्राप्ति के प्रथम जन्मदिन पर महापूजा - ह. प.भ.श्री राजेन्द्रभाई पटेल - भालजा मंडल ।
ता. २२-०९-२०२४	प.भ.श्री शैलषभाई चिमनलाल पटेल - मेडावाला ।
ता. २९-०९-२०२४	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - सुरत - ह. निलेष टांक ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची - सितम्बर-२४

रू।. ५१,०००/-	अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी श्री हरिकेशवदासजी की स्मृति में स्नेही भक्तो की और से भेट प्रे. हा. शास्त्री हरिप्रियदासजी स्वामी - गांधीनगर सेकटर-२३ मंदिर ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "विभीषण गीता"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सभी यहाँ पर बैठे है। तो अपनी यात्रा पूरी हो गयी। आप सभी थक गये है। कि नही ? अपनी यात्रा चालु थी। और चालु रहेगी। और हम सभी को ''लक्ष्य'' तक जाना है। अपनी यह यात्रा प्रारम्भ हुई तब से इस जीवात्मा की यात्रा चालु हुई है। जीवात्मा की कोई जाती, धर्म, वंश कुछ भी नही होता है। वह केवल सफेद कागज की तरह होता है। इस यात्रा के मध्य जीवात्मा का बार-बार जन्म होता है। उसी समय धर्म, जाति, वर्ग सब कुछ लागू हो जाता है। माया के कारण आमरुपी आवरण आ जाता है। और जीवात्मा यह भूल जाता है कि मै भगवान का अंश हूँ। जीवात्मा चेतन है। शक्तिशाली है। अनंत ज्ञान वाला है। कई दर्शन वाला है। लेकिन सर्व शक्तिमान नही है। अर्थात् परमपद को प्राप्त कर सकता है। लेकिन परमात्म नही बन सकता है। जन्म लेने के बाद 'विषय वासना' और कामना के कारण मन स्थिर नही रहता है। अर्थात जो स्थूल दिखाई देता है। वह मान लेता है। सूक्ष्म नही दिखाई देता है इस लिये भूल जाता है। हम किसी की तबियत का समाचार लेने जाते है तो क्या कहता है। मैं बिमार हूँ। लेकिन जो ज्ञानवान होगा वह कहेगा हमे कुछ नही हुआ है। मेरे शरीर में कुछ हुआ है। यह सब ज्ञान है। यह अच्छे शास्त्रो के अध्ययन से ज्ञात होता है। अपना यह जो जीवन संग्राम है। इन जीवन की लडाई है। उसमें सतशास्त्र है जो अधिक उपयोगी है। 'वचनामृत अति उपयोगी है।' कुछ लोगो को कठिन लगता है। प्रयास करने पर समझ सकते है। इसी प्रकार 'रामायण' 'भगवतगीता' ये मान्य शास्त्र है। ये अधिक उपयोगी है। इसमें भी अपनी 'शिक्षापत्री' सबसे अधिक उपयोगी है। वचनामृत भी अधिक उपयोगी है। कुछ लोगो को कठिन लगती है। प्रयास करने पर समझ में आती है। इसी प्रकार 'रामायण', 'भगवद्‌गीता' ये मान्य शास्त्र है। इसका अध्ययन करना चाहिए। गीता का ज्ञान यह महाभारत के युद्ध समय भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान दिये थे। वह यह बताता है कि जीवन में आने वाले कठिनाई से भागना नही चाहिए। इसी प्रकार से रामायण में लंका कांड में राम एवम् रावण का युद्ध हुआ। इसका वर्णन है। इसमें विभीषण के माध्मय से राम ने संसार को 'ज्ञान' दिये थे। इसे 'विभिषण गीता' कहा जाता है। इस युद्ध में रावण की सेना में हाथी-घोडा, अस्त्र-शस्त्र सब कुछ था। यह देखकर विभीषण को ज्ञात हुआ कि मेरे प्रभु के चरण में पादूका भी नही है। और वल्कल वस्त्र से भी है। तो युद्ध में विजयी कैसे होगे ? जहाँ पर मोह और प्रेम होता है। वहाँ पर संदेह हो जाता है। क्योंकि जिस पर प्रेम होता है ।उसका कुछ खराब न हो ऐसा भाव बन जाता है। विभीषण के मन में संदेह पैदा होता है। तो विभीषण ने राम से पूछा आप युद्ध में विजय कैसे प्राप्त करेगे ? युद्ध भूमि में ऐसा कोई प्रश्न करे तो क्रोध अवश्य आयेगा ? लेकिन भगवान राम क्रोध न करके। शांतभाव से कहे यह जो कुछ दिखाई दे रहा है। ''ये संसार का युद्ध है।'' यह क्षणिक मात्र है यह कुछ समय में खत्म हो जायेगा। आप रावण का वैभवशाली रथ देख रहे है। यह स्थूल है। भौतिक जगत का है। लेकिन यह अपना जो ''जीवन रथ'' है। उस में सूक्ष्म धर्म और अधर्म का युद्ध लगातार चलता रहता है। अपने अंदर की लडाई में भौतिक जगत का रथ काम नही आता है। अंदर की लडाई में कैसा रथ है ? बाहर का जो भौतिक रथ है। यह अंदर की लडाई में भाग लेता है। भौतिक रथ क्या होता है ? जो युद्ध के मैदान में दो पहिये वाला होता है। अपने जीवन रथ में यह अपना जीवन संग्राम की लडाई में शौर्य और धैर्य रुपी दो पहिया आवश्यक है। यदि रथ के पहिये अच्छे है तो वह किसी भी मार्ग पर रथ आगे बढता है। इसी प्रकार शौर्य न रहने पर जीवन के मार्ग पर आगे नही बढ कते है। धैर्य अर्थात् धीरज बनाये रखे। कभी कभी समय आने पर मनुष्य ठोकर खाकर आगे बढता

रहता है। अंदर धैर्य न होने के कारण आदमी टूट जाता है। रथ में पताका होता है। रथ पर जो बड़ा होता है उसे ध्वजा कहते है। और छोटे को पताका कहा जाता है। ये दोनो क्या बताते है। 'सत' और 'स्थिरिता' यदि हम सत्य रहेगे तो अपनी पहचान चरित्रवान के रुप में की जायेगी। अर्थात् अपनाजीवन शीलवान होना चाहिए। अपने में धैर्य होने पर किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते है। अब आता है चार घोडे। अपने जीवन रुपी रथ में चार 'अश्व' होते है। बल, विवेक, अहंकार और परहित, सर्व प्रथम बल ले तो अपना आत्मबल आता है। यह अंदर की मजबूती है। मैं तैयार हूँ। किसी भी परिस्थिति में आत्मबल मजबूत होना चाहिए। दूसरा विवेक आता है। विवेक आवश्यक है। यह जीवन का महत्व भाग है। समय के साथ उचित निर्णय लेना विवेक कहा जाता है। कौन सी नीति अपनाना है। उस पर ध्यान देना चाहिए। अयोग्य निर्णय से कष्ट प्राप्त होता है। कहावत भी है कि 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' अर्थात् जब मानव पतन की तरफ बढता है तो विवेक मर जाता है। तीसरा दंभ (अहंकार) है। यहाँ पर दम्भ का अर्थ है कि किसी परिस्थिति में जमे रहे। और चौथा है। परहित यह चौथा अश्व है। यह आगे के तीनो बल, विवेक और दंभ अश्व को शक्ति देता है। क्योकि इसके अंदर अच्छे विचार होते है। परहित अर्थात् दूसरे के सभी प्रकार से अच्छा करना होता है। परहित के बल से मानव का 'मनोबल' मजूबत बनता है। जीवन रथ में युद्ध के धर्म-अधर्म क्या है ? इसका ज्ञान हो पर मन स्थिर रहेगा। अपना अच्छा कब होगा ? जब दूसरे के हित में सोचते है। चारो अश्व के उपर लगाम होनी चाहिए ? क्योकि चारो अश्व युद्ध में बराबर चलते है। यदि एक अश्व में अहंकार आजाये कि हमारे बिना आगे नही बढ सकते है ? युद्ध में एक अश्व के रुकने से रथ आगे नही बढ सकता है। इसको बराबर चलाने के लिये लगाम होती है। नियंत्रण अति आवश्यक है। आवश्यकता पड़ने पर रथ को रोका भी पडता है। मंद भी करना पडता है। वेग से दौडाना भी पडता है। इस प्रकार रथ की गति बनाये रखना पडता है। जीवन रुपी रथ की लगाम सुरक्षित करने के लिये तीन वस्तुए आवश्यकत है। क्षमा, दया और समानता अपने अदंर का जब रुपी अश्व है। उसमें ऐसा अहंकार आ जाता है कि मैं सबसे शक्तिशाली हूं। दूसरे का काम हमारे विना नही चलेगा। परिवार में या कही पर समानता रुपी हथियार काम करता है। कईबार जीवनमें सच्चा होने पर भी दूसरे को क्षमा करना पडता है। नही तो परिणाम खराब हो सकता है। तो दया भी रखना पडता है। क्योकि ? क्षमा में दया का समावेश हो जाता है। अब आता है। सारथि, सारथी कैसा होना चाहिए ? हमे अपने जीवन का सारथि भगवान को बनाना है। अर्थात् लगाम भगवान को दे देना है। भगवान जिसके सारथी होते है। उसकी जीवन में पराजय नही होती है। युद्ध के लिये अस्त-शस्त्र भी चाहिए। भौतिक रथ में शस्त्र के रुप में ढाल, तलवार, फरसा यह प्रयोग किया जाता है। लेकिन जीवन रुपी रथ में हथियार के रुप में जो प्रयोग किया जाता है। वह वैराग्य, संतोष और दान इसमें वैराग्य ढाल है। जो मोह रुपी शत्रु से रक्षा करता है। क्योकि ? इस संसार का मूल ही मोह है। मोह की जड अंदर तक होती है। इसे वैराग्य से जीत सकते है। जीवन में वैराग्य होना चाहिए। अति तृष्णा आ जाने पर संतोष रुपी तलवार होनी चाहिए। संतोष रुपी तलवार में कामना कट जाती है। जीवन में संतोष रखना अति आवश्यक है। दान रुपी शस्त्र परशुराम के फरसे के समान है। जो कंजूसी को खत्म करता है। यह अन्तः शत्रुओ का नाश करते है। अब हमें चाहिए। युद्ध में दिव्यरुप का भी प्रयोग किया जाता है। अपने जीवनमें दिव्यास्त्र का प्रयोग करना पडता है। क्योकि माया कही से अपने उपर प्रहार करती है। तब यह अस्त्र कमजोर पड जाते है। अचल और अमर होना चाहिए। अचल अथवा पापरहित अमर अर्थात् स्थिर, तो व्यक्ति पाप रहित होने पर मन शांत रहेगा। दिव्यास्त्र का प्रयोग करने की स्थिति, का तभी ज्ञान आयेगा। क्योकि यह एक कला है। कौन शस्त्र कहाँ पर काम करेगा ? शत्रु को कैसे पराजित करेगे ? इसका ज्ञान आवश्यक है। जिस प्रकार हमारे उपर माया प्रहार करती है। उसी प्रकार उपयोग करना होता है। जीवन रुपी संग्राम का युद्ध कैसे लडना है। एक कुशळ योद्धा बनकर सभी शस्त्रो को बताया। जैसे कि 'शौर्य' धैर्य, बल, विवेक, क्षमा,

(पेईज नं. २०)

प्रेरणास्त्रोत

स्वामिनारायण संप्रदाय उत्तर विभाग के अहमदाबाद देश के गादी के प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री इस आधुनिक समय में परदे में रहकर धर्मपालन करते हुए । वर्तमान की आधुनिक तकनीक का प्रयोग करके । सत्संग का पोषण करते प्रेरक रुप है।

गद्दी पर आसीन होने के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से अपने हित के लिये प्रयत्न और् विचरण करके ऐतिहासिक कार्य किये है। और कर भी रहे है। यह सत्संग समाज के लिये प्रेरक होने के कारण लेख के माध्यम से अवगत कर रहा हूँ।

एकादशी की सभा : एकादशी की सभा प्रत्येक मंदिर में होती है। लेकिन कालुपुर मंदिर की प्रसादी की हवेली में मात्र बहनो के लिये सत्संग किया जाता है। आप के सानिध्य में २ से ४ सभा ये होती है। एक हजार बहने लाभ प्राप्त करती है। इसमें आकर कई बहनो का स्वभाव परिवर्तन हुआ है। तथा उनका जीवन सुगम हो गया है। गादीवालाश्री का आशीर्वाद खूब गम्भीर होता है। अपने शब्दो से समस्त बहनो को गृहस्थ जीवन की समस्या का समाधान, धर्म के साथ करने की सीख देती है।

प्रबोधिनी एकादशी जागरण : प्रबोधिनी एकादशी रात्रि जागरण की महिमा है। उस रात्रि को जागरण और रात्रि सभा प्रारम्भ की गयी। स्वयं ११ बजे रात्रि को ग्यारह बजे आकर प्रातः ५ बजे तक विराजती है। पूरी रात अहमदाबाद मंदिर की हवेली में हजारो बहने रात्रि में जागरण करके कथा, वार्ता, धुन, कीर्तन का लाभ लिये।

सत्संगी बहनो द्वारा गाँव में सत्संग सभा : अहमदाबाद देश के गांवो में मुमुक्षु बहने सत्संग का लाभ ले सके। इसके लिये एक सुंदर प्रयास है। आपश्री ने १० जितनी गृहस्थ बहनो को प्रशिक्षण सत्संग की दी थी। गाँव में सभा प्रारम्भ की गयी। जिस गाँव में स्थानीक बहने सभा नही कर सकती है। वहाँ पर अहमदाबाद से बहने सत्संग करने के लिये भेजी जाती है। निश्चित क्षेत्र के लिये बहने नियुक्त की गयी है। यही बहने शहर और् गाँव में सभा कराती है। यह सभा लगभग १६ वर्ष से चालू है। और स्थायी तौर पर चालू भी रहेगी।

सांख्ययोगी बहनो द्वारा कथा : सम्प्रदाय के सांख्ययोगी बहनो द्वारा प्रत्येक मंदिर में नियमित कथा-वार्ता की जाती है। लेकिन अहमदाबाद कालुपुर में सांख्ययोगी बहने बडी पीठ पर बैठकर नही की है। अब सांख्ययोगी बहनो का व्यास पीठ पर बैठकर कथा-वार्ता की प्रेरणा दी। साथ में रहकर कथा के लिये प्रेरणा की थी। आप के प्रोत्साहन से अहमदाबाद के अलग-बगल १०० जितने पारायण सांख्ययोगी किये गये। इससे गाँव को प्रधानता दी जाती है। सत्संगी बहने पोषण देती है। तथा इसके लिये अनेक महिला शिबीर आयोजित की जातीहै।

मंदिर निर्माण कार्य : (१) बीजापुर : श्रीहरि के प्रति अगाथ निष्ठा रखने वाले वजीबा प्रसादीभूत घर पर दर्शन करने आये थे। वहाँ पर प्रसादी के घर् के अगर-बगल वाले अपने घर का कचरा फेकते थे। यह देखकर वह अधिक दुःखी हुए। उन्होने पू. महाराजश्री से बात किये। सर्व प्रथम आपश्री के आज्ञा से साफ-सफाई की गयी। बाद में वहाँ पर दिव्य मंदिर बनाने के लिये मुख्य कारण बना। (२) परढोल : दहेगाम तालुका के परढोल गाँव में आप की प्रेरणा से और मार्गदर्शन से पू. महाराजश्री के आज्ञा से मंदिर का निर्माण किया गया। (३) बालासिनोर : बहनो के मंदिर का पुनः निर्माण आप की प्रेरमा से किया गया।

धनुर्मास धून : धनुर्मास में प्रत्येक मंदिरो में प्रातः धुन होती है। लेकिन बहनो की हवेली में धनुर्मास में पूरे महीने प्रातः ५ बजे हाजिर हो जाती थी। यह सत्संग के लिये प्रेरक रुप बना था। यह देखकर कई बहने मंगला आर्ती में आने के लिये प्रेरित हुई। इसके सानिध्य में पूरे धनुर्मास में धुन की यी। प्रातः मंगला आर्ती पर पहुंच

जाती है । श्रीनरनारायणदेव का दर्शन करके हवेली में घनश्याम महाराज की आरती उतारते है । धुन में बैढते है । श्रृंगार आर्ती का दर्शन करके घर आते है । यह धनुर्मास का नित्य कर्म रहता था । देखा तो नही है । लेकिन सुना है कि ठंडक में फूटपाथ पर सोने वालो को कम्बल वितरित किये गये ।

फूलदोलोत्सव : अपने कालुपुर मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती के दिन श्रीजी महाराज मंदिर के चौक में फुलदोलोत्सव करके रंगोत्सव मनाया जाता है । समय के साथ नरनारायणदेव के समक्ष कीर्तन और फूलउत्सव, आर्ती करके उत्सव मनाये । इसमें भी इन्होने मार्गदर्शन दिया था । नरनारायणदेव के प्रगटोत्सव के दिन रंगोत्सव हो यह अच्छा है । इससे सत्संगी भाई-बहनो की स्मृति बनी रहे । बाद में पू. महाराजश्री के आज्ञालेकर मंदिर के चौक में रंगोत्सव मनाया गया । हजारो हरिभक्तोने लाभ उठाया । यह देखकर अलग अनुभूति होती है ।

छपैया नारायण सरोवर की आरती : छपैया में नारायण सरोवर की आर्ती आपने प्रारम्भ करावया । एक बार वह कहे कि यदि गंगाजी यमुनाजी की आर्ती प्रतिदिन होती है तो नारायण सरोवर का क्यो नही आरती की जाये ? इस सरोवर में अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति स्नान करके महापावन किये थे । इस समय आपश्री के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री भी छपैया पधारे थे । उन्होने पू. लालजी महाराजश्री से बात किये । पू. लालजी महाराजश्रीने छपैया के महंतश्री से बात किये थे । बाद में छपैया के तत्कालीन महंत स्वामी श्री पू. गादीवालाश्री की ईच्छा और बात को सम्मान करते नारायण सरोवर की आर्ती प्रारंभ किये थे । यह आज भी नियमित रुप से होती है ।

आप का आशीर्वाद सुखद होता है । और बहनो को गृहस्थ आश्रम की कठिनाई को समझदारी से निकालना तथा धर्म युत व्यवहार सिखाती है । आप के वचन से बहनो को कई प्रेरणा प्राप्त होती है । और श्री नरनारायणदेव के प्रति श्रद्धा और निष्ठा दृढ होती है ।

केवल इतना ही नही मुमुक्षुो के सत्संग का पोषण करने का कार्य करते है । मानवता की दृष्टि से देखे तो कई कार्य किये है । एक समय अनाथ बच्चो के आश्रम की मुलाकात की थी । उन बच्चो को देखकर माता-पिता विहीन । तो अपने मदिर में क्या कर सकते है । इस विचार और प्रेरणा से अपने प.पू. महाराजश्री के आज्ञा से कालुपुर मंदिर द्वारा 'आँगन' संस्था का निर्माण किया गया है ।इसमें अनाथ बच्चो का पालन किया जाता है । एक माता की तरह लालन-पालन करते है । बालक उनहे मां कह कर पुकारते है । तो हृदय भर जाता है । आप के प्रेम से बालक सनाथ बन जाते है । और श्री नरनारयणदेव के सानिध्य में जीवन बीता रहे है ।

हम तो बडी बाते करते है । लेकिन करना कठिन है । पू. गादीवालाश्री अपनी डबल जिम्मेदारी सत्संग और घर की निभाती है । अपने शरीर और समय का भोग देकर पर्दे के भीतर से पू. महाराजश्री के आज्ञा में रहकर निर्वाह करती है ।

यह सब करते अनेक कठिनाई और विवाद भी हुए । जैसे के त्यागी, गृहस्थ सभी का मंतव्य है कि आज तक बहनो की अलग-अलग सभा गाँ वमें कराये नही । यह नया काम प्रारम्भ किये है । इससे कोई बदलाव नही आया । सभी का समय व्यर्थ होगा । ये अळग बात है , लेकिन गादीवालाश्री ने एकादशी को सभा में स्वयं के हृदय विचार व्यक्त किये । उन्होने कहा मुझे सजकर मंदिर में आ जाना अच्छा नही लगता है । संतोष नही होता है । जिस प्रकार भाइयो के लिये संत गाँव-गाँव धूमकर सत्संग का पोषण करते है । इसी प्रकार बहनो के लिये कुछ करे ? क्योकि सत्संग और भगवान की भूख सभी को होती है । लेकिन गाँव की बहने अनेक कारणो से कथा-सभा से वंचित रह जाती थी । हमारी जिमेदारी बनती है । जहाँ तक हो सके कर्म करते रहे । क्योकि यह पद जिम्मेदारी वाला होता है । ''प्रत्येक मुमुक्षु जीव को नरनारायणदेव को पहचान करवाना है।'' हमारी परम्परा गुरु मुखी है । आज तक जितने आचार्य बने है । अहमदाबाद और वडताल

गद्दी के इन सभी को भगवान पहचानवाये है । यह जिम्मेदारी पूर्ण करने के लिये आप सभी का साथ चाहिए । फिर कुछ बहने तैयार हुई । गाँव-गाँव से सभा करने के लिये गाँव-गाँव में सांख्ययोगी बहनो की कथा, सभा शिबिर की शुरुआत आज बहनो का सत्संग अच्छे स्तर पर है।

कहना तो बहुत कुछ है । जब इनके सानिध्य में बैठे तो अधिक ज्ञान होता है । इन का दयालु स्वभाव, सदैव हिम्मत वाला मुख, मर्यादित वाणी और विवेक देखकर धन्य होते है । जब श्री नरनारायणदेव के सत्संगी बहनो के लिये गुरु पद वर्तमान गद्दी वाले आये है । सद्‌गुण एवं मर्यादा में रहने वाले है । तो इनके जीवन में से थोडा प्रेरणा लेकर धन्य बने ।

(अनु. पेईज नं. १७ से आगे)

वैराग्य, संतोष का उपयोग करने से पराजय नही होगी । इसी प्रकार युद्ध जीतने के लिये ये साधन और रथ है । जीवन रुपी संग्राम जितने के लिये शरीर रुपी साधन है । यह सबसे बडा साधन है । इसे कैसे बताये ? शरीर रुपी साधन अच्छा नही होने पर जीवन संग्राम की लडाई कैसे जीत सकते है ? शरीर स्वस्थ होने पर माया रुपी प्रहार तो चौबीस घंटा झेल सकते है । इस प्रकार की तैयारी से मृत्यु भी हरा नही सकती है । यह यात्रा मोक्ष तक है । उसे हमे पूरा करना है । इसी प्रकार रामायण में भगवान राम ने युद्ध में विभीषण को उपदेश दिये है । पूरी मानव जाति को अच्छा संदेश दिये । इसी प्रकार महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन का संवाद है । इसमें से भी सीखने को मिलता है । अच्छे शास्त्र के पढने से अच्छे उपदेश ज्ञात होगे । शास्त्र पढने की आदत डाले । अपने आराध्यदेव स्वामिनारायण भगवानने विना किसी शस्त्र को धारण किये अंतशत्रु पर विजय प्राप्त करने का मार्ग दिखाये है।

●

छपैयाधाम

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

परात्पर पर ब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण का प्रागट्य भारत के उत्तर प्रदेशमें संवत १८३७ को चैत्र सुद-नवमी के दिन अयोध्यापुरी के पास छपैया गाँव में हुआ था । जन्म लेते ही उन्हो ने अनंत बालचरित्र प्रारम्भ कर दिये । छट्ठे दिन ही कालीदत्त द्वारा भेजे गये लोगो का नाश किये थे। माता-पिता को दिव्य सुख देने लगे । आनंदपूर्वक दिन बीत रहा था । असुर बारबार उपद्रव कर रहे थे । नववे वर्ष के हुए । तब उनका मुंडन संस्कार किया गया था । उस समय श्रीहरि छोटे-छोटे बच्चो के साथ खेलने गये थे । तभी कालीदत्त नाम का असुर श्रीहरि को मारने की ईच्छा जताई । लेकिन श्रीहरि अपने शक्ति से कालीदात्त का नाश किये थे । इस प्रकार कई बार उपद्रव होने लगा। लेकिन बाल घनश्याम सभी को शांत करके आनंद दे रहे थे । धर्मदेव का छोटा सा सुंदर घर था । जहाँ पर एक चबूतरा था । चबूतरा के पास एक इमली का वृक्ष था । उसके नीचे बैठ कर आनंद कर रहे थे । पूरा परिवार भक्तिमय वातावरण में था । सुहासिनी भाभी बाल घनस्याम को प्रेम से खिला रही थी । धीरे धीरे वह बडा होने लगे । कई चरित्र छपैया में किये । पूरे परिवार को खुश कर देते थे । असुरो के उपद्रव से परिवार अयोध्या में रहने गया । अयोध्या में बरहट्टा नामक स्थान है । उस स्थान पर रहने लगे । माता-पिता को दिव्य गति दिये । माताजीने पूछा मोक्ष का असाधारण लक्षण क्या है ? तभी बाल घनश्यामने कहा कि,

दृष्टा : स्पष्टानतावा, कृतपरीचरणा भोजीताः- पूजीतावा ।

कपिलजी जैसे देहहुती माता को कपिल गीता बताये थे । उसी प्रकार बाल घनश्यामने हरिगीता माताजी को बताये थे ।

इस हरिगीता का पाठ जो करेगा । अंतकाल में हरिगीता गायेगा । सुनेगा, सुनायेगा उसे श्रीहरि अवश्य अक्षरधाम में ले जायेगे । इस प्रकार बाल घनश्याम धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति सहित पाँच प्रकार की हरि गीता बताई।

सच्चे संत की सेवा तथा उनके मेल से जीवात्मा अज्ञान रुपी अंधकार से छूटकर मोक्ष को प्राप्त करती है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मे कृष्ण जन्माष्टमी को उल्लास पूर्वक मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में ता. २६-८-२०२४ श्रावण वद-८ के दिन श्री कृष्ण जन्माष्मटी का भव्य आयोजन किया गया था। प्रसादी के सभा मंडप में निज मंदिर का चौक प्रकाश से तथा मंडप इत्यादि अच्छे रुप से सजाया गया था। आज के दिन भारी वर्षा की भविष्य वाणी थी। जो कि वर्षा प्रातः से लेकर रात्रि तक हुई थी। लेकिन भगवान के भक्तो में इतना उत्साह था। कि चालु वर्षा में रात्रि ९ बजे से १२ बजे तक कीर्तन रास गरबा किये थे। कोठारी स्वामी की टीम भी हार मानने वाली नही थी। जन्मोत्सव मनाने का कुछ और ही जोश था। भगवान भी साथ में ही थे। पूरे शहर में जल जमाव हो गया था। फिर भी हरि भक्त लाभ लेने से वंचित नही रहे। सभी को फलाहारी प्रसाद खिलाया गया था। जब १२ बजा तब श्रीकृष्ण भवान के जयकार के साथ भव्य रुप से जन्मोत्सव की आरती की गयी। आनंद उत्साह की कोई सीमा ही नही थी। इसबार का प्रबन्ध अति अलौकिक था।

हजारो भक्तो को पंजीरी का प्रसाद बाँटा गया था। प.पू. महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प्रसंग के यशस्वी यजमान अ.नि. पटेल महेशभाई प्रहलादभाई, गं. स्व. चंपाबेन महेशभाई (डांगरवावाले-राणीप) तथा अ.नि. बलदेवभाई जीवणदास पटेल - ह. अश्विन बलदेवभाई पटेल (मेघाणीनगरवाले) आदि परिवार ऐसा महान लाभ प्राप्त किये थे। (कोठारी शास्त्री नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में जलझीलनी के श्री गणपति जी का वरघोडा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में भाद्र सुद-११ जलझीलणी एकादशी को परम्परागत श्री गणपतिजी का वरघोडा अच्छे से निकाला गया था।

इस बार प.पू. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से निज मंदिर के पास भव्य पंडाल में श्री गणपतिजी की स्थापना किया गया था। इस कारण से दादा के भक्त प्रतिदिन दर्शन करने आते थे।

श्री गणेश चतुर्थी के प्रथम दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को सर्व प्रथम श्री गणपति महाराज की पूजा-अर्चना करके आरती उतारी गयी थी। तत्पश्चात निज मंदि में बिराजमन श्री गणपतिजी की आरती उतारी गयी थी।

ता. १४-९-२०२४ को जलझीलनी एकादशी के दिन प्रातः ११ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। मंदिर के उपर विराजमान श्री गणपतिजी की आरती उतारकर श्री नरनारायणदेव का ओच्छव मंडल के साथ श्रीहरि के ७ वे और ८ वें वंशज के साथ पू. महंत स्वामी आदि संत मंडल जुडे थे। मंदिर के चौक में ओच्छव करते-करते मुख्य प्रवेश द्वार पर ओच्छव के पास पहुँचे प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री स्वा. बाग से पधारे थे। शायंकाल में नारणघाट मंदिर में ओच्छव मंडलने सुंदर ओच्छव करके ठाकुरजी को जलविहार कराके वरघोडा रात्रि को वापस श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर आया था। और ओच्छव करके पूर्ण किये थे। (कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में भाद्र सुद पूर्णिमा को सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में भाद्र सुद-१५ ता. १८-९-२०२४ के दिन सत्संग सभा का सुंदर आयोजन प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्री के सानिध्य में पूर्ण हुआ था।

सत्संग सभा के यजमान एक हरिभक्त ने लाभ उठाया था। आज के सत्संग सभा के वक्ता पू. स.गु. शा. स्वामी सद्‌गुणदासजीने सुंदर कथा का लाभ दिये थे । अंत में प.पू. महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद दिया था। सभा का संचालन पू. शा. मुनि स्वामीने सुंदर रुप में सम्भाले थे। (कोठारी शा. मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा

श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा में जेतलपुरधाम से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, शा. जनमंगल स्वामी आदि संत मंडल पधारकर सत्संग सभा करके कथा का सुंदर लाभ दिये थे। गाँव के सभी भक्त श्री नरनारायणदेव की निष्ठा रखने के उपर बात किये थे । अंत में श्रीहरि के नाम के स्मरण की धुन करके ठाकुरजी की आरती उताकर संत विदा हुए । (डाह्याभाई चेलाभाई बूटिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा (नालंदा-२)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा में अपनी सभी उत्सवो को उल्लास पूर्वक मनाया गया था। श्रावण मास में ठाकुरजी के सामने सुंदर हिंडोला बनाकर झूलाकर दर्शन कराया गया था। जिस में भाईयो एवम् बहनो ने प्रेरणात्मक सेवा किये थे।(के. वी. प्रजापति - कोठारी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापूनगर) और हर्षद कोलोनी में सत्संग लक्षीय प्रवृत्तियाँ

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा सह पूरे धर्मकुल के शुभ आशीर्वाद से पू. महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २३-७-२४ से २१-८-२४ तक अनेक प्रकृतिजन्य और कृत्रिम वस्तुओ का प्रतिदिन कलात्मक हिंडोला बहनो द्वारा बनाकर ठाकुरजी को झूलाया गया था । युवक मंडल ने कलात्मक मंडल बनाया था। हर्षद मंदिर के बच्चियों द्वारा कलात्मक हिंडोला किया गया था।

आगामी विशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में २० सत्संग सभा में से ८ वीं सत्संग सभा एप्रोच मंदिर में शायं को ४ से ७ के मध्य की गयी थी। प्रारम्भ में दो घंटे की धुन की गयी थी। कालुपुर मंदिर से आये प्रसंग से पू. महंत शा. स्वामी पुरुथोत्तमप्रकाशदासजी देश विभाग के लेख मर्यादा के अर्न्तगत रहकर सत्संग करने का आग्रह किये है। अन्य संत भी नियम के पक्ष में सत्संग की बाते किये थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा श्री केदारनाथ गुफा की सुंदर रचना की गयी थी । सभा के अंत में पू. महंत स्वामी तथा संत, यजमानश्री प.भ. अरविंदभाई आर. दोंगा ने इस गुफा का उद घाटन किये थे। गुफा में प्राकृतिक दृश्य के साथ जलाशय तथा बर्फ का शिवलिंग तथा हिंडोला में झूलते श्री नरनरायणदेव का नयनरम्य दर्शन कराया गया था। ता. ११-८-२०२४ को प्रात काल एप्रोच तक कालुपुर मंदिर तक पदयात्रा करके संत-भक्तोने श्री नरनारायणदेव का दर्शन किये थे। उसी दिन प.भ. श्री दासभाई की प्रेरणा से हर्षद कालोनी बाल मंडल के संचालक गोरधनभाई वीं. सीतापरा ने बालको को ओटोरिक्षा के माध्यम से कालुपुर मंदिर पर ले जाकर के हिंडोला तथा हिंडोला का दर्शन कराये थे। बच्चो को इतना आनंद आया कि वे लोग तीन बार दर्शन किये थे। गोरधनभाई ने बालको को पूरा संकुल की महिमा तथा जांबुडावाला गली में श्रीहरि का लीला चरित्र तथा ''आँगन'' के विषय में विशेष जानकारी दी थी। पू. महंत स्वामी के कार्यालय में पू. जयप्रकाशदासजी स्वामी खुश होकर बच्चो को मगस का लड्डू दिये थे।

हर्षद कोलोनी बहनो के मंदिर में श्रावण मास के अवसर पर दो घंटे की धुन गायी गयी थी। ता. १७-८-२०२४ के दिन कालुपुर मंदिर से सांख्ययोगी बहने पधारकर स्त्री सत्संग को बल प्रदान की थी। चतुर्मास नाम धर्मादा की कथा में गांधीगनर मंदिर के महंत शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी तथा शा. स्वामी भक्तिजीवनदासजी आदि संत तीन दिन तक रात्रि सेशन में कथा-वार्ता किये थए।

दोनो मंदिरो में जन्माष्मटी महोत्सव उल्लास पूर्वक नाया गया था।

एप्रोच मंदिर में श्रावण मास पर ता. १२-८-२०२४ से १-९-२०२४ तक महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी और शा. स्वामी भक्तिकिशोरदासजी ने वक्ता पद से शायं के सेशन में श्रीमद् सत्संगीजीवन की विशेष कथा ता. १-९-२०२४ के दिन समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। धुन छ घंटे तक चली थी। धुन के बाद आशीर्वाद देने के लिये पू. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) तथा कलोल, नाथद्वारा, पोरडा आदि मंदिरो से १२ जितने ब्रह्मनिष्ठ संत पधारे थे। हर्षद कोलोनी बहनो के मंदिर में ५ घंटे की धुन गायी थी। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण

कर्ताभाव का अभिमान

– डॉ. एच. बी. केराई (अंजार-कच्छ)

आज पूरे संसार में कोई भी ऐसा मनुष्य नही है जिसे कर्ता का अभिमान नही होता है। यह बात कहना सरल है। लेकिन प्रयोग में लाना अत्याधिक कठिन है। संसार के जीव प्राणी मात्र माया से ग्रस्त है। जो भी क्रिया करते है उसमें मेरा होना अवश्य होता है। कुछ अच्छे हो जाने पर व्यक्ति स्वयं श्रेय लेता है। भाग्यवश कुछ गलत हो गया तो लोग दूसरे के उपर चढा देते है।

अपने कर्ताभाव के अभिमान से जो जो कर्म किया जाता है। वह बंधनकर्ता होता है। हम सभी की अधिक क्रियाये बच्चे के खेल समान होती है। वह रेत का मकान बनाता है। मल-मूत से डरता नहीं है। उसे अच्छे और बुरे का अधिक ज्ञान नही होता है।

जहाँ पर कर्ताभाव का अभिमान नही होता है। तो क्रिया का पाप पुण्य नही होता है। लेकिन संसार में ऐसा व्यक्ति कहाँ पर है?

मनुष्य के उसके कर्म का फल देना यह जगत पिता भगवान का कार्य है। फिर भी मनुष्य उसमे माथा मारता है। भगवान का कोई सुनता नही है।

पूर्ण रुप से देखे तो अपने सभी क्रिया में संकल्प नही होता है। लेकिन यह मात्र अज्ञान है। अपने जिस कार्य में या संकल्प में यदि भगवान का सम्बंध होता है तो उसे ज्ञानमय मानते है। शेष पूरा झूठ है।

भगवान के एकांतिक भगत की और विमुख जीव की क्रिया में बड़ा अंतर होता है। कुसंगी या विमुख जो भी कर्म करता है। वह अपने इन्द्रियो के सुख के लिये करता है। और भगवान का भक्त जो क्रिया करता है तो वह केवल भगवान तथा भगवान के सत्पुरुषो को खुश करने के लिये करता है। कुसंगी की पूरी क्रिया स्वार्थी होती है। भक्त की क्रिया भक्ति स्वरुप होती है।

क्रिया एक न एक ही होती है लेकिन विनियोग के परिणाम से अधिक अंतर पडता है। यही क्रिया यदि भगवान के खुशी के लिये तथा उनकी आज्ञा के पालन से की जाये। तो यह मोक्ष दायी बनती है। ईश्वर परम चैतन्य स्वरुप वाले है। सुख की मूर्ति है। इस लिये उनकी शक्ति प्रभावशाली होती है। उनके याद करने से सब कुछ मंगल हो जाता है।

सामान्यतः देखे तो सुख, शांति और ज्ञान के मूल भगवान ही है। भगवान ही मोक्ष दाता है। इस लिये आप के संबंध से जो क्रिया की जाती है। वह मोक्षदायक ही होती है।

परमात्मा प्रभु सदैव मनुष्य का भला ही सोचते है। उनके साम्राज्य में कोई छोटा बड़ा नही होता है।

गरीब धनवान के लिये अलग से कोई दीवार नही होती है। जो कोई व्यक्ति सच्चे हृदय से सत्संग भक्ति में भाग लेता है। वे सभी उनके होते है। शेष विमुख जीव तो कई होते है। जिसे श्रीजी महाराज का आश्रय नही होता है। कर्ता भाव का अभिमान होता है। प्रभु के चरित्र के सामने कर्म की प्रशंसा करता है। वह व्यक्ति प्रभु की शक्ति की नही पहचान सकता है। इस लिये कई बार ईश्वर को निराकार भी समझता है।

ऐसा मनुष्य भले ही रात-दिन सत्संग में रहे। जहाँ तक उसे ईश्वर का साकार होना समझ में नही आता है। तब तक उसका सत्संग अधुरा रहता है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद એક
shree swaminarayan mandir amdavad-one

Mahant Shastri Swami
Purusottamprakasdasji

दिनांक : २१-०९-२०२४

॥ श्रीहरि ॥

सम्प्रदाय के सभी हरिभक्तो के लिये महत्वपूर्ण सूचना

स्वामिनारायण सम्प्रदाय और महाराजश्री के आज्ञानुसार, मंदिरो और हर प्रकार के प्रबन्ध को स्पष्ट और लिखित तथा पारदर्शक करने का उद्देश्य अनिवार्य है।

मंदिर का प्रबन्ध महाराज की आज्ञा और चैरिटी के नियमानुसार हो। ऐसा स्पष्ट आग्रह किया गया है।

सभी को ज्ञात करवाना है कि कोई भी हरिभक्त (भाई/बहन/पुत्र/पुत्री) मंदिर के नाम से पदार्थ या धन माँगे, साधु/ब्रह्मचारी/भगत/हरिभगत/सांख्ययोगी बहन, तो सभी को महाराज की स्पष्ट आज्ञा है कि कालुपुर मंदिर से पक्की रसीद प्राप्त करें।

कम से कम धन, अनाज, ठाकुरजी के लिये गहना अथवा वाधा (छोटी बडे सामान और धन)

रसीद के बिना कुछ किया जायेगा तो जिम्मेदारी देने वाले व्यक्ति की रहेगी। मंदिर की जिम्मेदारी नही रहेगी।

विशेषकर जिस कार्य के लिये पैसा दे। उस जगह मंदिर गाँव के देव से संलग्न है कि नही। उसका ज्ञान कोठार या प्रबंध कर्ता के पास से करे।

इस पत्र को अहमदाबाद देश के प्रत्येक मंदिर के नोटिस बोर्ड पर फ्रेम करके प्रत्येक हरिभक्तो, भाईयो एवम् बहनो का अवश्य अवगत करे। ऐसी प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा है।

– प.पू. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से

श्री महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मं
કાલુપુર.

श्री स्वामिनारायण मंदिर, કાલુપુર, અમદાવાદ-૩૮૦૦૦૧ મો.:- ૯૮૨૫૦૩૧૮૭૭, ૮૨૩૮૦૦૧૬૬૬
Shree Swaminarayan Temple, Kalupur, Ahmaedabad-380001 Mo.:9825031877, 8238001666

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

जेठ सुद-१ प.भ. राधाबाई लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), अ.नि. स.गु. स्वा. घनश्यामप्रसाददासजी गुरु पुराणी स्वा. घनश्यामचरणदासजी (कालुपुर मंदिर). **जेठ सुद-२** प.भ. कानजी प्रेमजी वरसाणी (कोडकी-कच्छ), अ.नि.प.भ. शर्मिष्ठाबेन कांतिलाल भट्ट (दिवका कोलोनी) । **जेठ सुद-३** प.भ. शर्विल के लग्न प्रसंग (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. परसोतमदास शिवदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. गं.स्व. रूखीबेन अंबालाल पटेल (गवाडा), अ.नि.प.भ. पार्षद देवु भगत जयसियाराम (राणा कंडोरणा), अ.नि.प.भ. हिंमतलाल मगनलाल (अहमदाबाद), प.भ. पार्षद भगु भगत पर (टींबा), प.भ. प्रीत-ऋषि नंदुभाई पटेल (मोटेरा), प.भ. अशोकभाई रावजीभाई पटेल (कालीगाम), प.भ. अंबालालभाई एम. पटेल (राणीप) । **जेठ सुद-४** प.भ. कांताबेन कुवरजी हिराणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. लताबेन जसुभाई काछीया (बालासिनोर), अ.नि.प.भ. मणीबेन अंबालाल भावसार (वडनगर), प.भ. प्राप्तिबेन चंद्रकान्तभाई पटेल (राणीप) । **जेठ सुद-५** अ.नि.प.भ. शामबाई विसराम गामी (माधापर-कच्छ) । **जेठ सुद-६** प.भ. राजेशकुमार जयंतीलाल पटेल (मोटेरा), प.भ. लालजी केसराभाई केराई (मांडवी-कच्छ) । **जेठ सुद-७** प.भ. जयराजभाई नगीनदास पटेल (लसुन्द्रा), अ.नि.प.भ. अरूणाबेन हिंमतलाल सोनी (अहमदाबाद) । **जेठ सुद-८** प.भ. दिलीपभाई शंभुभाई सोनी (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. मधुकांता माणेकलाल पटेल (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. अमरबाई शामजी शियाणी (मानकुवा-कच्छ) । **जेठ सुद-९** प.भ. मधुबेन सोमदास पटेल (साणंद) । **जेठ सुद-१०** अ.नि.प.भ. चिमनभाई मरधाभाई पटेल (धमासणा), अ.नि.प.भ. रामाभाई वालाभाई पटेल (रतनपुर-संतरामपुर), अ.नि.प.भ. अमथीबेन मथुरदास पटेल (वड्डु), प.भ. नवीनचंद्र छबीलदास वडोदरीया (अहमदाबाद), प.भ. निलेशभाई लल्लुभाई मांगुकिया (अहमदाबाद), एरटेक एन्जी. कुं (अहमदाबाद), प.भ. निकीता कमलेशभाई दवे (अहमदाबाद), प.भ. आदित्य दिपककुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रमणभाई भगवानदास पटेल (धमासणा) । **जेठ सुद-१०/११** प.भ. सोनी कृष्णकांत कांतिलाल (साणंद), प.भ. मित राकेश चोकसी (राजकोट) । **जेठ सुद-११** प.भ. मितलबेन राजेशभाई पटेल (मोखासण) । **जेठ सुद-१२** प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. गभरूभाई एम. वेकरीया (सुरत), प.भ. नर्मताबेन जगदीशभाई पटेल, नरनारायण ईन्फ्रास्ट्रकचर प्रा.ली. (गांधीनगर), प.भ. भीमजीभाई नानजीभाई वाटलीया (निकोल), प.भ. कुं. सुहेलीया हार्दिक जोशी (वहेलाल), प.भ. क्रिनाबेन पुस्कलभाई पटेल (अहमदाबाद), श्री नरनारायणदेव के खुशी हेतु (अहमदाबाद) । **जेठ सुद-१३** प.भ. कानबाई करशन वेकरीया (सुखपर-कच्छ), अ.नि.प.भ. लालजी हरजी केराई (गोडपर-कच्छ), प.भ. लावरी विजयभाई भुदरभाई (वस्त्राल), प.भ. लीशाबेन नरेन्द्रभाई पटेल (झुलासण) । **जेठ सुद-१४** प.भ. प्रतिकभाई नारणभाई पटेल (अंबापुर), अ.नि.प.भ. लालभाई केशवलाल पटेल (मुबारकपुरा), उनावा मित्र मंडल, प.भ. देवस्वी जीगरभाई पटेल (राणीप), अ.नि.प.भ. वाडीभाई रामदासभाई पटेल (अहमदाबाद) । **जेठ सुद-१५** अ.नि.प.भ. सविताबेन चिमनलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नारायणभाई वरसाणी तथा रजनीभाई (सामत्रा-कच्छ), प.भ. आशाबेन चंपकलाल ठक्कर (अहमदाबाद)

जेठ वद-१ अ.नि.प.भ. नारण कानजी रूपारेलीया (भुज-कच्छ), प.भ. मनीष जीतुभाई चोकसी (अहमदाबाद), प.भ. सुरेशभाई भगवानभाई (सोला), अ.नि.प.भ. बालकृष्ण परसोतमभाई पटेल (बापुनगर), प.भ. नेन्सीबेन भावेशभाई खात्राणी (निकोल), प.भ. निवा मयंक पटेल (लसुन्द्रा), प.भ. खुमानसिंह हेमाजी चौहाण (टांकीया) । **जेठ वद-३** प.भ. धनजी करशन हिराणी (मांडवी-कच्छ), धर्मकुल आश्रित युवक मंडल (निकोल) । **जेठ वद-४** प.भ. अमरबाई धनजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. सोलोशभाई गोपालभाई नायक (पानसर) । **जेठ वद-५** प.भ. घनश्यामभाई सागरभाई पटेल (मुबारकपुर), प.भ. विष्णुभाई गांडाभाई पटेल (सोला), पूज्य बिन्दुराजा (स्वा. बाग मेमनगर), अ.नि. स्वा. भजनप्रकाशदास तथा अ.नि. स्वा. अचलस्वरूपदासजी (कुंडलधाम) । **जेठ वद-६** अ.नि.प.भ. विरबाई कानजी हिराणी (भारापर-कच्छ) । **जेठ वद-७** प.भ. गोरधनभाई प्राणभाई पटेल (अहमदाबाद) । **जेठ वद-९** प.भ. चावडा रणजीतसिंह बलदेवजी (बिलोदरा), प.भ. नारायणभाई ईश्वरभाई पटेल (पोर), प.भ. मगनभाई प्रभुभाई पटेल (धरमपुर-कडी), प.भ. कश्यप हिंमतभाई वडोदरिया (अहमदाबाद) । **जेठ वद-१०** अ.नि.प.भ. भरतभाई जगजीवनदास गज्जर (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. महेन्द्रभाई खेमचंदभाई सोनी, पूज्य सौम्यभैया प्रफुलकुमार द्विवेदी (ह. पूज्य बिन्दुराजा) (अहमदाबाद) । **जेठ वद-१३** प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. पंकजभाई किरीटभाई पटेल (मोखासण), श्री राधाकृष्णदेव प्रसन्नार्थे प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद) । **जेठ वद-१४** प.भ. कमलेशकुमार एम. पटेल (अहमदाबाद) । **जेठ वद-३०** स.गु. संत स्वामी (स्वा. मंदिर कालुपुर), प.भ. मयंकभाई कामदार (अहमदाबाद)

अषाढ सुद-२ प.भ. हार्दिक बलदेवभाई चौधरी (बदपुरा), पू. संत स्वामी (कालुपुर मंदिर), प.भ. आयुषीबेन देवेनभाई दिनेशभाई सोनी (अहमदाबाद), श्री घनश्याम टीम्बर मार्ट प.भ. करशनभाई, प.भ. दिपकभाई मणीलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. सविताबेन रणछोडभाई देवाणी (निकोल), प.भ. भरतकुमार सोमालाल मोदी (हिंमतनगर), प.भ. तेजेश रमणलाल मोदी (वडनगर), प.भ. यतिन नंदुभाई पटेल

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

(कलोल), अ.नि. मनीषभाई शामजीभाई मांकडीया (प्रेमगढ-जेतपुर). **अषाढ सुद-३** अ.नि. चतुरभाई झवेरदास सोनी (उनावा), प.भ. जीवाभाई मफतभाई पटेल (चडासणा), प.भ. ध्रुवभाई गौरवभाई पटेल (अहमदाबाद). **अषाढ सुद-४** प.भ. गीराबेन भोलाभाई पटेल (नारणपुरा). **अषाढ सुद-५** प.भ. नंदीनी कमलेशभाई पटेल (अहमदाबाद). **अषाढ सुद-६** प.भ. कल्पनाबेन भट्ट (अहमदाबाद), अ.नि. वेलबाई विश्रामभाई भगत (मोरबी). **अषाढ सुद-८** प.भ. सुरेशभाई मणीलाल गज्जर (नारणपुरा), प.भ. मनहरभाई एन. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हर्षदभाई एल. पटेल (शिलज), प.भ. कनुभाई जे. प्रजापती (अहमदाबाद), प.भ. रेवाबेन जसवंतभाई पटेल (उंझा), अ.नि. केसरबाई कल्याण केराई (मेघपर-कच्छ). **अषाढ सुद-९** प.भ. श्रेय दर्शन पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. मंगुबेन के. पटेल (खेरोल). **अषाढ सुद-१०** अ.नि. नवीनभाई भोगीलाल हिराणी (मानकुवा-कच्छ), अ.नि. शंकरभाई मूलजीभाई पटेल (अहमदाबाद) **अषाढ सुद-१२** सांख्ययोगी मंजुबा (हवेली), श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), अ.नि. रसिकभाई राजाभाई झवेरी (अहमदाबाद), प.भ. नटवरभाई पी. पटेल (कलोल), प.भ. भगवानभाई शंकरभाई पटेल (मणीपुरा), अ.नि. परबत नाथा (कुंदनपर-कच्छ), प.भ. देवसी हिरजी भूडीया (सुखपर-कच्छ). **अषाढ सुद-१३** प.भ. प्रेमबाई देवसी वेकरीया (मदनपुर-कच्छ), प.भ. परसोतमभाई हरिभाई पटेल (मोखासण), अ.नि. मावजी शिवजी जेसाणी (सुखपर-कच्छ). **अषाढ सुद-१४** प.भ. अतिश प्रकाशभाई भावसार (अहमदाबाद). **अषाढ सुद-१५** प.भ. वालजी करशन हिराणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. नटवरभाई भूलाभाई पटेल (धमासणा), अ.नि. हसुभाई अमृतलाल महेतलीया (मुंबई), प.भ. विजयाबेन लक्ष्मीबेन रमणीकलाल दाणी (मुंबई), प.भ. शांतिलाल तथा भरतभाई (सुखपर-कच्छ), प.भ. शिव साहिलभाई राठोड (अहमदाबाद), प.भ. माधवजी शामजी भूडीया (भुज), अ.नि. कानजी मावजी भूडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. हरिवंश विशालभाई पटेल (अहमदाबाद).

अषाढ वद-२ प.भ. घनश्यामभाई मूलजीभाई ठक्कर (गांधीधाम), प.भ. परसोतमभाई रामजीभाई सापरा (अहमदाबाद). **अषाढ वद-३/४** प.भ. रमेशभाई गोविंदभाई पटेल (सुरत), प.भ. देवजीभाई दिनेशभाई कथीरीया (सुरत), प.भ. नंदुभाई हरिभाई पटेल (झुंडाल), अ.नि. ज्योत्सनाबेन गोविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. गौरांग मनसुखभाई पटेल (अहमदाबाद) **अषाढ वद-५** प.भ. श्लोक वासुदेवभाई पटेल (कलोल), प.भ. मंजुलाबेन जयंतीलाल शाह (अहमदाबाद) **अषाढ वद-७** अ.नि. विरूबेन जेरामभाई रादडीया (गांधीनगर). **अषाढ वद-८** अ.नि. शंकरभाई मूलजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. केसुभाई बेचरभाई काछडीया (राजकोट), प.भ. रविना, उर्विश कनुभाई चौधरी (अमेरिका), प.भ. भूपेन्द्रभाई मनुभाई पटेल (कलोल), प.भ. रतनबेन मूलजी हालाई (नारणपर-कच्छ), अ.नि. गोपालभाई गोविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. देवलबेन किंजलभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हरिदर्शनभाई लालभाई भाई (अहमदाबाद). **अषाढ वद-९** प.भ. हरि अमलेशभाई (अहमदाबाद), प.भ. अतुलभाई अरविंदभाई पटेल (लसुन्द्रा). **अषाढ वद-१०** अ.नि. जसुबेन देवसी राबडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. भीखाभाई नारणदास पटेल (मोखासणवाला). **अषाढ वद-१२** अ.नि. हेमलताबेन दिनेशचंद्र चोकसी (अहमदाबाद), प.भ. भीखाभाई वस्ताराम पटेल (सोजा-वडनगर), प.भ. भरतभाई बालुभाई वाछडीया (निकोल), श्री राधाकृष्णदेव प्रसन्नार्थे प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ). **अषाढ वद-१३** केतनभाई रावजीभाई पटेल (झुंडाल). **अषाढ वद-१४** प.भ. जीतेन्द्र मावजी खीमाणी (दहींसरा-कच्छ), अ.नि. विनोदचंद्र ईश्वरभाई पटेल (झुंडाल). **अषाढ वद-३०** प.भ. सोनी नरेन्द्र दशरथलाल (अहमदाबाद), अ.नि. काशीबेन दुर्लभभाई वेकरीया (अहमदाबाद), प.भ. हिंमतभाई तलसीभाई खोखाणी (मोटी वावडी), प.भ. हरिशभाई नरसिंहभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. आकाश हसमुखभाई पटेल (माणसावाला)

सम्प्रदाय के गौरव

अपने न्यूजीलैण्ड, आकलैण्ड के श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल की पत्नी श्रीमती रंजनाबेन पटेल को सर्वोच्च एवार्ड **NZ BHOF (BUSINESS HALL OF FAME)** से सन्मानित किया गया है। आप की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री ने आशीर्वाद के साथ नरनारायणदेव से प्रार्थना की है।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

गणेश चतुर्थी को श्री गणपति पूजन आरती उतारते और अपने कालुपुर मंदिर में इस वर्ष नारीयल के परत में श्री गणपतिजीकी दृश्य रचना की गयी थी। उसकी आरती करते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

अचारडा (मूली प्रदेश) गाँव में हनुमानजी की पूजा के बाद सत्संग सभा का सम्बोधन करते मूली मंदिर के महंत स्वामी।

अपने छपैया मंदिर में नये संकुल का निर्माण का अवलोकन करते प.भ. करशनभाई के साथ सलाह-सूचन देते प.पू. श्रीराजा।

मूली मंदिर में जलझीलणी का वरघोडा।

जेतलपुर मंदिर में जलझीलणी का वरघोडा।

अपने आकलैण्ड (न्यूजीलैण्ड) के प्रेसिडेन्ट प.भ. श्री डॉ. कांतिभाई पटेल की धर्मपत्नी को न्यूजीलैण्ड का सर्वोच्च नागरिक सन्मान से सन्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्हे धर्मकुलकी तरफ से शुभेच्छा दी गयी।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

कोलोनिया (अमेरिका) के मंदिर में १९ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुजी के समक्ष सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

नये वर्ष के कैलेन्डर - दट्टा प्रकाशित हो चुके है । शीध्र प्राप्त करले

अहमदावाद श्री नरनारायणदेव देश द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा उन्होने पसंद किये गये ।अलौकिक दर्शनीय सुंदर नये वर्ष का कैलेन्डर प्रकाशित हो गया है। (अपने छोटे-बडे मंदिर में यही कैलेन्डर बनेगा कुछ परिव्रतन नही किया जायेगा) यह अपने मंदिर में मिलेगा। नये वर्ष का दट्टा प्रकाशित हो गया है। समय से ले ले तथा मंदिर के लिये जो हरिभक्त कैलेन्डर बनवाना चाहते है वह निम्न मोबाईल पर सम्पर्क करें।

कालुपुर मंदिर कोठार आफिस
बालु स्वामी मो. : ९४२७०७०३७१,
श्री सुरेशभाई मो. : ९१७३०८९०३०,
श्री जमालभाई मो. : ७९९०५१९४७८
मंदिर के लिये रु।. ८-०० मूल्य

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल
श्री विपुलभाई मो. : ९७२५४४९२८८,
श्री प्रयागभाई मो. : ९४२९०६७५८४
विज्ञापन के लिये रु।. १०-०० मूल्य

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર,અમદાવાદ એક

shree swaminarayan mandir amdavad-one

Praful Kharsani